महाकवि देव कृत

रस-बिलास

सम्पादक

श्री तिलेश्वर नाथ शास्त्री

साहित्य-संसार

१२५, महात्मा गाँधी रोड,

कलकत्ता-७

महाकवि देव कृत

रस-बिलास

सम्पादक

श्री तिलेश्वरनाथ शास्त्री

प्रमुख वितरक

बनारस मर्केन्टाइल कं०

पोस्ट बॉक्स ६२८, कलकत्ता

प्रकाशक :

साहित्य-संसार

१२५, महात्मा गाँधी रोड

कलकत्ता-७ (भारत)

प्रथम मुद्रण. अक्तबर. १९६१

Price outside India
Sh 3/6, $0.90

गणतंत्र भारत में मुद्रित

Sole Distributors.

THE BANARAS MERCANTILE CO.

P.O. Box 928, Calcutta-1 India

Mahakavi Dev's
RAS-BILAS.
Edited by
Shri T. N. Shastri.

Published by
Sahitya-Sansar
125, M. G. Road
Calcutta-7 (India)

महाकवि देव

[जन्म सम्वत १७३० विक्रमी निर्वाण १८४६ विक्रमी]

रीतिकाल की तरुणाई में कविता कामिनी की सौन्दर्य वृद्धि करने वालों में महाकवि देव का श्रेष्ठतम स्थान है। जीवन की अनुभूति का काव्य में मुख्य स्थान है, पर कवि की परिस्थिति भी उसके काव्य पर प्रभाव डालती ही है, हमारा उद्देश्य कुछ और ही हुआ करता है पर परिस्थिति का वातावरण हमें किसी दूसरे ही अपरिचित तट पर लाकर खड़ा कर दिया करता है। विश्व के अन्य मानवों की भाँति देव भी इससे अछूते न रह सके।

इटावा मण्डलान्तर्गत सनाढ्य ब्राह्मण वंशोत्पन्न महाकवि देव १६ वर्ष की ही अवस्था से कविता कामिनी के पुजारी बन गये। इनकी स्वाभिमानिता ने इन्हें किसी एक स्थान पर विश्राम न करने दिया, एतदर्थ महाकवि को प्रायः समस्त भारत का भ्रमण उपयुक्त आश्रयदाता की खोज में करना पड़ा, जिसका ज्वलन्त उदाहरण रस-बिलास में देश-भेद नायिका वर्णन है।

सम्वत् १७८३ वि० में राजा भोगीलाल के दरबार में महाकवि ने अपना रस-बिलास प्रस्तुत किया और इस अनमोल मोती के पारखी वही बने। यथा :—

पावस घन चातक तजै, चहै स्वाति जल बिन्दु।
कुमुद मुदित नहिं मुदित-मन, जौ लौं उदित न इन्दु॥

देव सुकबि तातें तजें, राइ रान सुलतान।
रस-बिलास सुनि रीझिहैं, भोगीलाल सुजान॥

भूलि गयौ भोज बलि बिक्रम बिसरि गयौ,
जाके आगे और तन दौरत न दीदे हैं।
राजा, राइ, राने, उमराइ उनमाने,
उन माने निज गुन के गरब गिरबीदे हैं॥
सुजस बजाज जाके सौदागर सुकबि,
चले हू आवै दसहू दिसान के उनीदे हैं।
भोगीलाल भूप लख पाखर लिवैया जिन,
लाखनि खरचि रचि आखर खरीदे हैं॥

परन्तु दुर्भाग्यवश देव भोगीलाल के यहाँ भी स्थिर न रह सके एवं यत्रतत्र विचरण करते हुए कुल २५ पुस्तकों की रचना की। रस-बिलास की समाप्ति तक देव की अवस्था भी ५३ वर्ष की हो चली थी और "आश्रयदाता सुखाय" ग्रन्थों की रचना करते करते उनके हृदय में वैराग्य की भावनायें अंकुरित होने लगी थीं, "बीचि मरीचनि के मृगलौं.....पूजि गुबिन्द के" (इसी पुस्तक का पृष्ठ ६५ सवैया ६२ देखिये)। वृद्धावस्था में देव घर पर ही रहने लगे थे एवं पौत्र-प्रपौत्रों के योग्य होने के कारण पर्याप्त सुखी थे।

महाकवि देवकृत

रस-बिलास

प्रथम-बिलास

[वन्दना]

सवैया—

पायनि नूपुर मंजु बजैं कटि, किङ्किनि के धुनि की मधुराई।
साँवरे अंग लसै पट-पीत, हिये हुलसै बनमाल सुहाई॥
माथे किरीट बड़े दृग चञ्चल, मन्द हँसी मुख चन्द जुन्हाई।
जै जग मन्दिर-दीपक सुन्दर, श्री ब्रज दूलह देव सुहाई॥१॥

काम की महत्ता

दोहा—युक्ति सराही मुक्ति हित, मुक्ति भुक्ति को धाम।
युक्ति मुक्ति अरु भुक्ति कौ, मूल सु कहिये काम॥२॥
बिना काम पूरन भये, लगै परमपद छुद्र।
रमनी राका-ससिमुखी, पूरै काम समुद्र॥३॥
तातें त्रिभुवन सुर असुर, नर पसु कीट पतंग।
राक्षस, जक्ष, पिसाच अहि सुखी सबै तिय संग॥४॥
कोटि कोटि बिधि कामिनी, तिनके कोटिन भेव।
तिनमैं माया मानुषी, बरनि कहैं कबि देव॥५॥

कामिनी भेद

दोहा—सो नारी कहु नागरी, पुरबासिनि ग्रामीन ।
बन सयना अरु पथिक तिय, षट बिधि कहत प्रवीन ॥६॥

नागरी वर्णन (भेद)

दोहा—देवल रावल राजपुर, नागरि तरुनि निवास ।
तिनके लक्षन भेद सब, बरनत जाति बिलास ॥७॥

देवल नागरी

दोहा—देवल देवी नागरी, दूजी पूजनहार ।
द्वारपालिका तीसरी, बरनहुँ त्रिविधि विचारि ॥८॥

कबित्त—पूरन सरद-ससि मण्डल बिसद जोति,
मण्डल बितानि मैं अखण्ड गुनगाहिनी ॥
अमल अमोल मनि रतननि रच्यौ महा,
सुन्दर सुमन्दिर अमन्द मुख चाहिनी ॥
आठहूँ पहर कर आठौं, आठौं सिद्धि लिये,
सेवक मैं सेवक सहाइ सदा दाहिनी ॥
रूपरस एबी महादेबी देव देवनि की,
सिंहासन बैठी सोहैं, सोहैं सिंह बाहिनी ॥९॥

पूजनहारि

कबित्त—केसरि कपूर मृग मद चोवा चन्दन अरु,
रचि रचि पुहुप चढ़ावति महानी के ।

धूपदीप भोजन समीपहीं निवेदन करि,
वेदन जताइ जपै नाम बरदानी के ॥
जानत न जीकी तन जीकी कोऊ देव कहै,
वाहि रट पीकी भट बाहिर कहानी के ।
कही जू दुराइ जदुराइ बर पाइबे को,
रुकमिनि रानी पग पूजत भवानी के ॥१०॥

द्वारपालिका

कबित्त—जगमगैं जोतिन के मोतिन के हार हिये,
उलहत भार मृदु मालती की मालिका ।
केसरि की खौरि देव पौरि पर मोहिनी सी,
देव मुनि मोहैं बिधु बदन बिसालिका ॥
नवला चतुर नवला सी लिये हाथ,
अबलानि जानि देति जब देति कर तालिका ॥
एबी अद्भुत वह कैसी ह्वै हैं देबी,
जाके मन्दिर के द्वार सोहै ऐसी द्वारपालिका ॥११॥

रावल नागरी भेद

दोहा—रावल नागरि पाँच बिधि, पहिले राजकुमारि ।
तासु धाय दूती सखी, दासी कहूँ समारि ॥१२॥

राजकुमारी

दोहा—ठकुराइन सब नगर की, सुख सम्पति की मूल ।
गुन गरबीली मानिनी, जाके पति अनुकूल ॥१३॥

कबित्त—पाँवरिन ते पाँवड़े परे हैं पुर पौरि लगि,
धामधाम धूपन के धूम धुनियत हैं।
कस्तूरी अगर सार चोवा-रस घनसार,
दीपक हजार ते अँधार लुनियत हैं॥
मधुर मृदंग राग रंग के तरंगनि मैं,
अँग अँग गोपिन के गुन गुनियत हैं।
देव सुख साजैं महाराज बृजराज आज,
राधाजू के सदन सिधारे सुनियत हैं॥१४॥

मंजुल अखण्ड खण्ड सातयें महल महा,
मण्डल चौवारी चण्ड मण्डल के चोटहीं।
भीतर हूँ लालन के जालन बिसाल जोति,
बाहर जुन्हाई जगै जोतिन के जोटहीं॥
बरनत बानी चौंर ढारत भवानी कर जोरै,
रमारानी ठाढ़ी रमन के ओटहीं॥
देव दिगपालनि की देवी सुखदाइनि ते,
राधा ठकुराइनि के पाइन पलोटहीं॥१५॥

धाय

दोहा—राजनगर जे जन बसत, ते राजन के मीत।
तिनकी तिय नृप सुतनि की, होतीं धाय पुनीत॥१६॥
बारे पीछे प्याइ पै, स्यानी करै सिखाय।
तिहिं जानौं जननी कुँवरि, ताहि बखानौं धाय॥१७॥

कबित्त—राई नौन वारति गुराई देखि अँगनि मैं,
दुरै न दुराई पैं भुराई सौं भरति है।
ज्यों-ज्यों सुघराई सो न उघरत देह त्यों-त्यों,
सुन्दर सुघर घर घेरी ना घिरति है॥
निठुर डिठौना दियैं नीठि निकसन कहैं,
दीठि लागिबे कैं डर पीठ दै गिरति है।
जिन-जिन ओर चितचोर चितवत त्योंहीं,
तिन-तिन ओर तृन तोरति फिरति है॥१८॥

दूती

दोहा—

धाइ, सखी, दासी, नटी, ग्वालि, सिल्पिनी नारि।
मालिनि, नाइनि बालिका, पटवा बधू विचारि॥१९॥
सन्यासिनि, भिक्षुक बधू, सम्बन्धी की बाम।
एती होतीं दूतिका, दूत पन्थ अभिराम॥२०॥
छलसों पैठहिं राजगृह, मोहैं राजसुतानि॥
हिलवैं मिलवैं दम्पतिनि, कहैं सँदेसो आनि॥२१॥
रस उपजावैं परसपर, नितनित नेह बढ़ाइ।
रहैं दुहुनि चित मैं चढ़ी, दूती चतुर सुभाइ॥२२॥

सवैया—

लेहु लला उठिलाई हौं बालहिं, लोक की लाजहिं सौं लरि राखो।
फेरि इन्हैं सपनेहुँ न पैयतु, लै अपने उर में धरि राखौ॥

देवलला अबला नवला यह, चन्द्रकला कटुला करि राखौ।
आठहुँ सिद्धि नवो निधि लै घर, बाहर भीतर हूँ भरि राखौ ॥२३॥

कबित्त—कुंजनि कैं कोरे मैन केलि रस बोरे लाल,
तारनि कैं खोरैं बाल आवति है नित को।
अमृत निचोरे कल बोलत निहोरे नैक,
सखिन के डोरैं देव डोलैं जिततित को॥
थोरे थोरे जवनि बिथोरैं देत रूप रासि,
गोरे गोरे मुख भोरे भोरे लेत हित को।
तोरैं लेत रति-दुति मोरैं लेत मतिगति,
छोरैं लेत लोक लाज चोरैं लेत चित को ॥२४॥

सखी

दोहा—बन्धु बिप्र कुल गुरु सुता, औ गुनवन्ती कोइ।
सोई राजसुतानि की, सखी सहेली होइ ॥२५॥
दुहूँ सुनावत दुहुँन गुन, उपजावत रस भाय।
बिरहा स्वास दिखाय पुनि, दोऊ बिरह जताय ॥२६॥
इतको उतहिं उराहनौं, इत उत कौ सन्देस।
दुहूँ मिलावन परसपर, रचिबो भूषण भेस ॥२७॥
देसकाल अनुरूप बिधि, करिबो सदा प्रसन्न।
ए दस कर्म सखीनि के, करे रहैं आसन्न ॥२८॥
समै समै के काज पै, सखी अनेक प्रकार।
धाइ कहूँ दूती कहूँ दासी कहूँ विचार ॥२९॥

सखी के दस कर्म

परस्पर गुण वर्णन

सवैया—

आई हौं देखि बधू इक देव, सु देखत भूली सबै सुधि मेरी।
राख्यो न रूप कछू बिधि के घर, ल्याई है लूटि लुनाई की ढेरी॥
एबी अबै वह ऐबै है बैस, मरैगी महा बिष घूँटि घनेरी।
जे जे गुनी गुन आगरि नागरि, होंहिंगी वाकी चितौतहिं चेरी।३०।
देव न देखति हौं दुति दूसरी, देखे हैं जादिन तैं यदुभूप मैं।
छाइ रही री वहै छबि कानन, कानन आनन ओप अनूप मैं॥
ये अँखियाँ सिखियानि तिहारिये, जाइ मिली रस बूँद ज्यों कूप मैं।
कोटि करैं अब क्यों निकसैंगी, समाइ गईं सुभ साँवरे रूप मैं।३१।

नायक-नायिका कौ रस उपजाइबौ

कबित्त—त्रिबली तरंगिनि निकट नाभि ह्रद तट,
रोम राजीवन घुसि मुकत अन्हात हैं।
नेह नगरी मैं गुनगेह उर ऊँची पौरि,
देव कुच कंचन के कलस लखात हैं॥
लोचन दलाल ललचावति बटोहिन कौं,
लाल चलि देखौ लाल मोलनि लहात हैं॥
जोबन बजार बैठ्यो जौहरी मदन सब,
लोगनि कैं हीरा वाके हाथ ही बिकात हैं।३२।

सवैया—

ग्वालि गई इक ह्याँ की वहाँ, मग रोकी सु तो मिसकै दधि दानि कौ ।
वातौ भटू वह भेटी भुजा भरि, नातौ निकासि कछू पहिचानि कौ ॥
आई निछावर कै मन-मानिक, गोरस दै रस लै अधरान कौ ।
वाही दिना ते हिये में गड़ौ वहै, ढीठ बड़ौरी बड़ी अँखियान कौ ।३३।

विरहाश्वासन

सवैया—

काहू की बंक चितैबे की संक, न लागै कलंक बिसै किन बीसौं ।
वा ठकुराइनि की अब देव, बिरंचि रची रुचि रावरे जी सौं ॥
दै हौं मिलाय तुम्हैं हौं तिहारिये, आन करौं बृषभानु लली सौं ।
बाभन की सौं बबा कीसौं, मोहन मोंहिं गऊ कोसौं गोरस कोसौं ३४
नन्द कुमार इतैं उत ठाकुर, राधे इतैं अति ही ठकुराइनि ।
देव सँयोग तिहारौ दुहूँ को, बन्यो कुल सम्पति सील सुभाइनि ॥
पाइ न लागियै मेरी भटू, नित चाहत हौं ही लगी इन पाइनि ।
आज तुम्हैं बृजराज मिलाऊँगी, राज करौ गृह काज गुसाइनि ।३५।

परस्पर दर्शन

सवैया—

सील की सागर रूप-उजागरि, है गुन आगरि नागरि भारी ।
वा बरसाने के बासिन कौं, निसिबासर सोम समान समारी ॥
नागरि बैस बड़ी ठकुराइनि, सो सुखदाइनि है जु हमारी ।
श्री बृषभान के भौन को दाइ, कराइहै राधिका राजकुमारी ।३६।

कानन कुण्डल माल गरें, सँग मण्डित गोपिन के कुँवरेटा।
देव गयन्द से आवत मन्द से, देख री चन्द से नन्द के बेटा॥
काम की दूती पढ़ावत तूती, चढ़ी पग जूती बनात लपेटा।
पीरौ झगा पटुका बिन छोर, करी कर लाज जरी सिर फेटा॥३७॥

बिरह

कबित्त--जबते कुँवर कान्ह रावरी कला निधान,
कान परी वाके कहूँ सुजस कहानीसी।
तबहीं ते देव देखी देवतासी हँसतिसी,
रीझतिसी खीझतिसी रूसति रिसानीसी॥
छोही सी छली सी छीन लीनी सी छकी सी,
छिन जकी सो टकी सी लगी थकी थहरानीसी।
बीधो सी बँधी सी बिष बूड़ति बिमोहति सी,
बैठी बाल बकति बिलोकति बिकानी सी।३८।

ऐपन की ओप इन्दु कुन्दन की आभा चम्पा,
केतकी कौ गाभा जोति जोतिन सों जटियत।
जगर मगर होत जोत सहज जवाहर से,
एतिही उजारे जब नैसक उलटियत॥
वैसेई सुढार सुकुमार अंग सुन्दरी के,
ललन तिहारे पास नेहखरे लटियत।
देव तेव गोरी के बिलात गात बात लगैं,
ज्यौं ज्यौं सीरे पानी पीरे पान से पलटियत।३९।

बरुनी बघम्बर में गूदरी पलक दोऊ,
कोए राते बसन भगौहैं भेष रखियाँ।
बूड़ी जल ही में दिन जामिनि हूँ जागैं भौंहैं,
धूमसिर छायौ बिरहानल बिलखियाँ॥
अँसुवा फटिक-माल लाल डोरे सेली पैन्हि,
भई हैं अकेली तजि चेली संग सखियाँ।
दीजियै दरस देव कीजियै सँजोगिनि ये,
जोगिनि ह्वै बैठी हैं बियोगिनि की अँखियाँ।४०।

दम्पति को उराहनो

सवैया—

तो गुन देव सुनें जब तें, तबतें सुधिऊ न उन्हें उर की है।
पीर नहीं पहिचानत लोग, बखानत बैद बिथा जुर की है॥
लोभ चढ़ी अति मोहन की मति, मोह महागिरि ते ढुरकी है।
थोरियै बैस बिथोरी भटू, ब्रज भोरी सी बातनि मैं भुरकी है।४१।
ह्याँ सुधि यों बिसरी उत हाँ, पलही पल जात हैं प्रान चलेजू।
जो कहियै तौ कह्यौ नहिं मानत, कहैं ही बिना घर केते घलेजू॥
देव दुहूँ बिधि बूड़ उतैंही की, रावरे बातन ये बदले जू।
और उराहनों देत बनै न, कहा कहूँ कान्ह भले हौ भले जू।४२।

परस्पर संदेश

सवैया—

राधे कही है कितैं छमियौ, ब्रजनाथ कितै अपराध किये मैं।
कानन तान न भूलत ना, खिन आँखिन रूप अनूप पिये मैं॥

आपने ओछे हिये मैं दुराइ, दयानिधि देव बसायलिये मैं।
हौं ही असाधबसी न कहूँ, पल आध अगाध तिहारे हिये मैं।४३
जाती हौ जौ उत वे जो मिलैं, कहूँ पाओ समौ कहिबेकौं ठिकानैं
ह्याँकी दसा तुम देखि यहै, कहियौ समुझाइ ज्यों वे जिय आनैं
या मन की बिन पाये बिथा, तिसकी कबिदेव जू कौन बखानैं।
तोसो हितू हित की बिन और, सु को इतकी चित की गति जानैं।४४

दम्पति को मिलाइबौ (परस्पर मिलन)

सवैया—

जा दिन ते हित जान्यौ इतैं, तब तें नहिं तू कहि काहू सौं बोलैं।
तेरेई ह्वै रहें भाट भटू, तव सौगुनौ रूप सराहत डोलैं॥
देव इन्हें सुख सौं सजि कै, रस सौं रचि कै तजि लाज के ओलैं।
राधे अहो हरि भावते कौं भरि, कै भुज भेंटिये मेटि मलोलैं।४५।
देव तज्यौ गुन गौरव औ, गुरु लोगनि सौं छल-छिद्र करे मैं।
धाय धसी बृषभान के भौन, समान के गोप सबै निदरे मैं॥
तोहित जाय हितू हित के भई, दूती के दाइनि पाइ परे मैं।
लाल उन्हें उर-माल करौ गहि, डारहु बाँह गुपाल गरे मैं।४६।

भूषण बेष रचना

सवैया—

चोवा मिलै मृग-मेद घसै, घनसार सौं केसरि गारति डोलैं।
देव जू फूल फुलेलन की, घर बाहर बास बगारत डोलैं॥
भूषन बेष बनाइ नये, पहिराइ पुराने बिगारत डोलैं।
राधे के अंगनि ही सगरौ दिन, संग ही संग सिगाँरत डोलैं।४७।

प्रसन्न करना

कवित्त—भरे गुन-भार सुकुमार सरसिज-सार,
सोभा रूप सागर अपार गुन आँवड़े ।
नख नग जाल लाल अंगुरी बिधुपभाल,
नूपर मराल ए अनूपर उनाँवड़े ॥
धरिये न पाँव बलि जाँव राधे चन्दमुखी,
वारौं गति मन्द पै गयन्दपति छाँवड़े ।
छितही छुवत देव दूनी होति झलक,
पलक हूजे ढाढ़ी हौं पलक करौं पाँवड़े ॥४८॥

सखिन कौ सुख सुनैं सौतिन को महादुख,
होत गुरु जननि के गुन कौ गरूर है ।
देव कहै लाख लाख भाँति अभिलाख पूरि,
पीके उर उमगत प्रेम रस-पूर है ॥
तेरौ कलबोल कल भाषन कौ स्वाति बूँद,
जहाँ जाइ पर्‌यो तहाँ तैसोई समूर है ।
व्याल मुख बिष ज्यौं पियूष ज्यौं पपीहा मुख,
सीपमुख मोती कदली मुख कपूर है ॥४९॥

शिक्षा वर्णन

दोहा—धाय सखी कै दूतिका, कै दासी अभिराम ।
जासौं दम्पति हितकरैं, शिक्षा ताकौ नाम ॥५०॥

सवैया—

वारी हौ बैस बड़ी चतुरी हौ, बड़े गुन देव बड़ी ये बनाई।
सुन्दरि हौ सुघरी हौ सलौनी हौ, सीलभरी रसरूप सनाई॥
राज-बहू बलि राजकुमारि, अहो सुकुमारि न मानौ मनाई।
नैसक नाह के नेह बिना चकचूर, ह्वै जैहैं सबै चिकनाई।५१।

दासी वर्णन

दोहा—दम्पति आयसु करन कौ, सनमुख रहति चितौति।
दासी नागरि सेवकनि, कहूँ ह्वै रही सौति॥५२॥

सवैया—

दम्पति एकहिं सेज परे, पग पीड़ुरि दाबि दुहूँ कौं रिझावति।
आपने ऊँचे उठौहैं कठोर, उरोजन कौं मलैं एड़ी मिलावति॥
भौहैं अमेठि रहैं ठकुराइनि, ठाकुर कै उर काम जगावति।
लौंड़ी अनोखी लड़ावति लाल की, पाइ पलोटै कि चोटैं चलावति

दोहा—देवल रावल नागरी, इहि बिधि बरनौं देव।
राजनगर नागरि कहौं, न्यारे लक्षन भेव॥५४॥

इति श्री रसबिलासे कवि देवकृते देवल रावल नागरी वर्णनम् नाम प्रथमो बिलासः॥१॥

द्वितीय बिलास

दोहा—रानी राधा हरि सुमिरि, बानी देव प्रकास।
रस बिलास नृप नागरी, बरनन प्रथम बिलास।१।

राजनगर नायिका भेद

दोहा—राज नगर नागरि बिबिधि, बरनत सुकबि सँभारि।
एक हटबई की बहू, दूजी गनिका नारि।२।
पुनि अनेक करि हट बइनि, कही अनेक प्रकार।
गनिका गनै न सत असत, चाहै धनी उदार।३।
तजि अपने कुल धर्म अरु, करैं नए व्यौहार।
सोई जाति प्रसिद्ध ह्वै, बैठैं हाट बजार॥४॥
राजनगर की नागरी, पुनि अनेक बहुभाँति।
तिनमें मुख्य मनुष्यतिय, बरनि कही दस जाति।५।
जौहरिनी, छीपनि कहौं, पटवनि और सुनारि।
गन्धिनि, तेलिनि, तमोरिनी, किन्दुनि, बनिनि, कुम्हारि।६।
दरजिनि आदि अनेक लघु, जाति चूहरी अन्त।
नगर द्वार गनिका बसैं, सो चाहैं धनवन्त॥७॥

जौहरिनि

कबित्त—साँची सुधा बुंदनि सौं कुन्दन की बेलि किधौं,
साँचे भरि काढ़ौ रूप ओपनि भरति है।

पोखी मुख रागनि बिमुख नख सिख करि,
चरन अधर बिद्रुमन ज्यौं धरति है ॥
हीरा सँग सनि मोती मानिक दसन स्वेत,
स्यामता लसनि दृग हीरा को हरति है ।
जोबन जवाहिर सौं जगमग होतजात,
जौहरी की जोइ जग जौहर करति है ॥८॥

छीपनि

सवैया—

सोने से सोहत गातनि सोहैं, सुहागिनि की अति सोहैं सुहाई ।
देव जू आवै लगी अँखियान मैं, देखत ही मुख की अरुनाई ॥
ज्यों ज्यों रँगै पटरंग निचोरति, त्यों निचुरै अँग अंग निकाई ।
दै छबि छापैं करैं मन छाप, सुछीपनि बाल छिपै न छिपाई ।९।

पटवनि

सवैया—

रेसम के गुन छीलि छरा करि, छोरति ऐंचि सनेह रचावै ।
देव दसौं अँगुरी उरझाइ कै, डोरी गुहै रस-रंग मचावै ॥
मोहति सी मन मोहत सी जन, जोहति सी तनि भौंह लचावै ।
चञ्चल नैननि सैननि सौं, पटवा की बहू नटवा से नचावै ।१०।

छनारिनि

सवैया—

देव दिखावत कञ्चन सौं तन, औरन कौ मन तावै अगौंनी ।
सुन्दर साँचे मैं दै भरि काढ़ी सी, आपने हाथ गढ़ी बिधि सौंनी ॥

सोभित चूनरी स्याम किसोरी कै, गोरी गुमान भरी गज गौंनी।
कुंदन लीक कसौटी में लेखी सी, देखी सुनारि सुनारि सलौंनी।११।

गन्धिनि

कबित्त—अरगजैं भीजे मरगजैं बागैं बनी ठनी,
हाटि पर बैठी आनिही सुघर पन सौं।
इन्दु सौं बदन मृगमद बिन्दु बेंदी भाल,
झलकैं कपोल गोल दूने दरपन सौं॥
मैंन मद छाके नैन देखि देव मुनि मोहैं,
सोहैं सटकारे बार कारे सरपन सौं।
बन्धु कीये मधुप मदन्ध कीये पुरजन,
सु मोह्यो मन गन्धी की सुगन्ध झरपन सौं।१२।

तेलिनि

कबित्त—तिल हैं अमोल लोल नैनी के कपोल बीच,
कोटिक अनूप रूप वारि फेरियतु है।
सोभा सुनैं जाकी कबि देव कहें कौन कौन,
होत चित चीकनौ चतुर चेरियतु है॥
घाट बाटहू मैं घट निपट बटोहिनि कौं,
नेकही निहारै नेहभरे हेरियतु है।
सरस निदान तकि परस के कौन कहे,
पौनहूँ के परस परौसी पेरियतु है।१३।

तमोलिनि

सवैया—

रङ्गित चोली तें ढोली खरी, चुनि चाव सौं आछे उघेरि अमेंठी।
गोरी गुलाब लिये छिरकै, छबि भाव सो देव सुभाव सौं ऐंठी॥
सोने से अंग सुरंगनि ओठनि, कौन के जाति हिये मैं न पैठी।
ऊँची दुकान पै बेचति पान, तमोलिनि ऐंचति सींचति बैठी।१४।

किन्दुनि

सवैया—

मीठो महा मृदु बोल कहै, लघु बोल कहै मुसुकाइ सुभाइनि।
देव भुलाइ बटोहिनि बाट, डुलावति चोरि लिये चित-चाइनि॥
रूप अनूप भरी नखतैं सिख, सूक्ष्म सुधार सही की रसाइनि।
हाट के ऊपर हाटक-बेलि सी, बेचति है हलवा हलवाइनि।१५।

बनिनि (मोदिनि)

कबित्त—मदन के मोदभरी जोबन प्रमोद भरी,
मोदी की बहू की दुति देखे दिन दूनी सी।
चाव रहै चित्त मैं चितौत दारिदै न राखी,
बोल मोल मीठी खाँड़ घीऊ तै न ऊनी सी॥
राज बाट बीच बाट पारति बटोहिनि की,
बाट घाटि तौलैं मनु आँखिनि मैं खूनी सी।
चूनरी सुरंग अंग ईंगुर के रंग देव,
बैठी परचूनीकी दुकान पर चूनी सी।१६।

कुम्हारिनि

सवैया—

चन्दमुखी मुरि मन्द हँसै, मुख मोतिनि कौं गहि खोल्यो डबा सौं।
देव सुधा भरे ऐंठि उठे कुच, भेंटि अघात सही मधवा सौं॥
रूप उभार कुँभार की जोई के, जोबन कौन तचायौ तवा सौं।
काम के चक्र चढ़ायौ न को, घट वाकौ न कीनौ अवास अँवासौं १७

दरजिनि

सवया—

अन्तर पैठि दुहूँ पट कै, कबि देव निरन्तरता उर आनै।
देत मिलाइ घनै अपनैं, गुनसार सुई किधौं दूती सुजानै॥
ताहि लिये कर मैं घर मैं रहै, जाहि सियै भरमैं सोई छानै।
होत करेजनि की दरजैं, दरजी की बहू बरजी नहिं मानै।१८।

चूहरी

कबित्त—चीकने कपोल चौका चमकैं चुनी से दन्त,
तीखे चारु चञ्चल दृगञ्चल निबङ्कनी।
कञ्चुकी मैं कसै कुच कञ्चन कली से झीने,
अँचरे के ओट झाँई रञ्चक उझङ्कनी॥

चटकोली चूनरी मैं चोट सी चलावै भौंहैं,
चेटक सी चालि पग जूती कर कङ्कनी।
फूल से झरत छबि झर लागैं झारू देत,
चूहरी चतुर चित-चोरति चमङ्कनी ॥१९॥

गणिका

सवैया—

चाट उचाट सी चेटक सी, भृकुटी चिकुटीनि जम्हाति अमैंठी।
जोबन के इतराहट सौं, अठिलात अछोटनि ऐंठनि ऐंठी॥
सौति भई सब नारिन की, सिगरे नर मोहि मनौं मन पैठी।
देव दृगञ्चल छोरनि सौं, चित चोरति यौं चित चोरनि बैठी।२०।

इति श्री रसबिलासे कविदेव कृते नगर नागरी वर्णनम् नाम द्वितीयो बिलासः ॥२॥

तृतीय बिलास

दोहा—रानी राधा हरि सुमिरि, बानी देव प्रकास।
रसबिलास नागरि नगर, आयो द्वितिय बिलास ॥१॥

पुरबासिनि नायिका भेद

दोहा—पुर कहियै छोटौ नगर, राजनगर कौ तीर।
अपने अपने धर्म मैं, चारि बरन कौ भीर ॥२॥
तहाँ विप्र, क्षत्री, बनिक, कायथ कुल अरु सुद्र।
नाऊ, माली, रजक ए, पुरबासी निरहुद्र ॥३॥
पुरबासिनि तिनकी तिया, कुल आचार बिचार।
लिये धर्म सुभ-कर्मपन, लाज काज व्यौहार ॥४॥

ब्राह्मणी

दोहा—सत्य सील सन्तोष निधि, विप्र बधू सबिबेक।
न्हान गान जप तप नियम, पूजन भजन अनेक ।५।

सवैया—

गंग तरंगनि बीचि बरंगनि, ठाढ़ी करै जप रूप उदोती।
देव दिवाकर की किरनैं, निकसैं बिकसैं मनु पंकज जोती॥
नीर भरी अलकैं निचुरैं, छुटिकैं छलकैं मनौं माँग के मोती।
बिज्जुल सी लपटैं झलकैं, कन कज्जल सी अँग उज्जल धोती।६।

क्षत्राणी

दोहा—क्षत्र धरन क्षत्रिय कह्यौ, भूपति सोहै ठाम।
पूरब मैं रजपूत अरु, पच्छिम क्षत्रिय नाम ॥७॥
रजराखन रजदान भट, गाय विप्र हरि पीर।
ताकी तिय क्षत्रिय बधू, बरनी गुननि अहीर ॥८॥

रजपूतानी

सवैया—
भाग भरी अनुराग भरी, बड़ भागिनि सुद्ध सुहागिनि छाजै।
अंग अनंग तरंगनि जानि, इकै गनिये सब संगनि साजै॥
संचित कै रुचि बंचि बधूनि, बिरंचि रची रचना सुनि लाजै।
प्रेम भरी पुर भूप सुता गुन, रूप रची रजपूतनि राजै ॥९॥

खतरानी

सवैया—
ज्यौं बिनही गुन अंक लिखै, धुनि यौं करिकै करता करि हार्‌यौ।
देव सुबानिक देखि अचानक, आन कहूँ न को आन कुमार्‌यौ॥
लाज लचैं त्रिय और रचैं, बिनकाज बिरंचि बिचारि बिचार्‌यौ।
बारिये को रिस चीरति रानी, इतौ खतरानी को रूप निहार्‌यौ।१०

वैश्यानी

कबित्त—पीर पीन कुचनि पै कञ्चुकी बदन कसी,
निकसी निकाई परै सूहे की सुहाती मैं॥
गोरे गरैं तरैं लरैं मोतिन की,
तामैं झमकति धुकधुकी जैसे दूलह बराती मैं॥

देव चित चुभे भेष ए न खुभे बाजूबन्द,
ललकत लाल लगिबे कौ रँगराती मैं।
नव जोबनी की जोबनी की जोति जीति,
रही कैसी बनै नीकी बनी नीकी छबि छाती मैं।११

कायथिनि

कबित्त—रीझै रिझवारि इन्दु बदनी उदार सूर,
रूख की सी डार डोलैं रङ्ग रखियानि मैं।
साँवरी सलौनी गुनवन्त गज गौनी महा,
सुन्दर सुघर लाख लाख लखियानि मैं॥
जागी सब रैनि बड़भागी पिय प्यारे संग,
प्रेम रस पागी अनुरागी रखियानि मैं।
दारिम से दसन मन्द हँसनि बिसद-भरी,
सदभरी सोभा मदभरी अँखियानि मैं॥१२॥

सूद्राणी

कबित्त—नेह सौं निचोरैं चित-चोरैं डीठि जोरैं को न,
डोरैं लागी ढोरैं डार सुरति अहार की।
सोने के सरोज से उरोज उमगौं हैं,
गोरैं अंग मैं सुहाई देव सुही जरतार की॥
कण्ठ सिरीकण्ठ कटि किंकिनी कंगन कर,
ऊजरे पगनि गूजरी सु झमकार की॥
चन्द सौं बदन मन्द हँसनि गयन्द गति,
कौबरी कुरङ्ग नैनी कुँवरि किरार की॥१३॥

नाइनि

कबित्त—घर घर डोलत सुघर नर मोहिबे कौं,
ऊघरी फिरत सब मुख सुख दैनियाँ।
जावक कैं मिस काम-पावक जगावै देव,
हिय कौं हरत यौं करत कर सैनियाँ॥
प्रेमी अनुरागिन कौं हियरो रिझावै,
अरुझावै सुरझावै बिरुझावै नैन पैनियाँ।
बेनी गुहिबे कौं पिकबैनी सौं तनैनी फिरै,
पैनी चितवनि की चपलनैनी नौनियाँ॥१४॥

मालिनि

कबित्त—बीनत फिरत फूल दार्‌यौ दल से दुकूल,
लैं भुजमूल लटैं घूमैं ज्यौं अलिनियाँ।
चौसर चमेली चारु पहिरैं सिंगार हार,
लची कुचभार जीति लीनी हैं फलिनियाँ॥
जुही गुही नाग आँख चम्पक पराग छुही,
देव लखैं लोचन लजाती हैं नलिनियाँ।
बाग मैं बिलोकी अनुराग की सी बौहनी सी,
मोहनी सुघर जग मोहिनी मलिनियाँ।१५।

धोबिनि

कबित्त—घाट पर ठाढ़ी बाट पारत बटोहिनि की,
चेटक सी डीठि मन काको न हरति है।

लटकि पटकि पट छियौ करि मटकति,
देव भुज मूलनि तैं फूल से झरति है ॥
जोबन की ऐंठ अठिलागि सी उठौहैं कुच,
ओठनि अमैंठि पट ऐंठि कै धरति है।
धोबिनि अनौखी यह धोवति कहा धौं करि,
सुधा मुख राखत न ऊधम करति है ॥१६॥

ग्रामिणी नायिका वर्णन

दोहा—बन मैं जो लघुपुर बसैं, ताकौ कहिये गाँव।
तहाँ बसैं ग्रामीन तिय, तिन्हैं गँवारी नाँव ॥१७॥
अहिरिनि अरु काछिनि कहौं, नारि कलारि कहारि।
नूनेरी अरु पाँच बिधि, बरनहु नारि गँवारि ॥१८॥

अहिरिनि

सवैया—

माखन सौं मन दूध सौं जोबन, हैं दधि तैं अधिकै उर ईठी।
छैल रँगीलिका छाछि कै आगे, समेत सुधा बसुधा सब सीठी ॥
नैननि नेह चुवै कबि देव, बुझावत चैन बियोग अमीठी।
ऐसी रसीली अहीरी अहै, कहु क्यों न लगै मन मोहन मीठी।१९।

काछिनि

कबित्त—राखै समाधान समाधान के दिखैयनि कौं,
ईंगुर से अंगनि आँगुरी है गँवारि मैं।

देव कही जगमगी जोबन जुन्हाई ऐसी,
येते पै जुन्हाई पैठी सरवर बारि मैं ॥
बारनि सुखावत उघारै सीस गावति,
भुलावति सी लोगनि फिरत चहूँ पारि मैं ।
आँचर अँगौछि औंछि औंछि कुच पौंछि लिये,
कौंछ मैं कमल डोलैं काछिनि कछार मैं ।२०।

कलारिनि

सवैया—

आप पिवै अरु औरनि प्यावति, लाज के तूल ज्यौं तूमति डोलै ।
जोबन जोम जकीसी कलारि, छकी मद सौं झुकि झूमति डोलै ॥
गावति रीझि रिझावति त्यौं, मतवारनि कौं मुख चूमति डोलै ।
काम के बान हनी हिय मैं, घर बाहिर घाइल घूमति डोलै ॥२१॥

कहारिनि

कबित्त—जगमगैं जोबन जगी हैं रँगमगी जोति,
लाल लहँगा पै पीली ओढ़नी बहार की ।
झाँझ की झँवरिया मैं सफरी फरफरात,
बेचति फिरति बोलै बानी मनुहार की ॥
चाहैंहूँ न चाहैं चहूँ ओर ते गहत बाँहैं,
गावत उमाहैं रोकि रहै चित हार की ।
देखत ही मुख विष लहरि सी आवै लगी,
जहर सौं नैन करै कहर कहार की ॥२२॥

नूनेरी

कबित्त—पीरे पीरे आँचर स्वेत लुगरा लहर लेत,
लँहगा की लगी लाल रँगी रङ्ग हेरा की।
गावत मैं डोरी-हाई अँगियाँ उचौहैं कुच,
बीच पचरंग पीतिताई तीनि फेरा की॥
हायनि लखौटा पाइ चूरा पचमनी गरैं,
गोरी की जुगल जानु है उन्हारि केरा की।
गजगौंनी नौंनी धरैं नौंन की ढरैया सीस,
नीरज से नैन नारि निरखी नुनेरा की॥२३॥

बनबासिनि नायिका वर्णन

दोहा—बन्या बनबासिनि बहू, ताहू त्रिबिध बखानि।
मुनि त्रिय अरु त्रिय व्याध की, और भीलिनी जानि।२४।

मुनि तिय

सवैया—
फूली लतान कौ छत्र दिये, मन पत्र सुखासन है सुखकारी।
चौंर करै चमरी चय मोर, चकोर मृगी मृग चाकर भारी॥
गावति भौंर लजावति कोकिल, आइ मिले सिगरे बनचारी।
जीति लिये मृगराज सबै, अब राज करै रिषि राजकुमारी॥२५॥

व्याधतिय

सवैया—
है करबीन लिये परबीन, बजावति गावति मोहनी तानन।
मोहि लिये मृग और खग मानुष, गान सुनैं समुहैं करि कानन॥

सोर पर्‍यो सिगरे बन बीच, न कोऊ रह्यौ तपसी थिर थानन ।
बङ्क बिलोकनि बेधि हियौ, सु कियौ बध व्याध बधू बिनि बानन ॥२६॥

भीलिनि

कबित्त—स्यामघन ऐसे तन सघन जघन ऊँच,
घने घुघुरारे बार जोबन जकी फिरै ॥
मोर पच्छ भूषन बिराजैं गुंज माल गरैं,
मद भरे नैन नैक टारै न टकी फिरै ॥
किलकि किलकि पुलकत काम व्याकुल ह्वै,
सीतल सलिल अवगाहत थकी फिरै ॥
× × × ×
× × × × ॥२७॥

सेन्या वर्णन

दोहा—कटक बसै ते सेनया, तीनि भाँति कहि ताहि ।
इक वृषली, वेश्या द्वितिय, त्रितिय मुकेरिनि जाहि ॥२८॥

वृषली

कबित्त—लहलह्यौ जोबन हँसत डहडह्यौ मुख,
गहगह्यौ काजर चखनि चकायौ है ।
कानन करन फूल सोहत जरी दुकूल,
नथ मैं अधिक लटकन लटकायौ है ॥
लाल चल बैठी टेढ़ी चितवनि सु मन्द चाल,
चीकनै कपोल गोल को न भटकायौ है ।

भौंहनि मरोरि मुरि मोरि गोरे गात देखौ,
बातनहीं सिगरौ कटक अटकायौ है ॥२९॥

वेश्या

कवित्त—उज्जल उज्यारी सी झलमलात झीनी सारी,
झाईं सी दिखाई देत देह की बिसाल सी ।
जोबन की जोतिन सौं नखतैं सिखा सौं मिलि,
कहै कबिदेव ऐसी एक है महाल सी ॥
बोलनि हँसनि मन्द चलनि चितौनि,
चारुताई चतुराई चित चोरिबे की चाल सी ।
संग मैं सहेली सौं नबेली बाल रगमगे,
अंग अंग सोभा जगमगति मसाल सी ॥३०॥

मुकेरिनि

कवित्त—राची कर मेँहदी महावर सौं राजै पग,
घाघरे की घूम मति घूमति घनेरिनि की ।
रंग भरे गोरे अंग अँगिया लसति नीली,
लाल ओढ़नी मैं डीठि डोलै चित चोरनि की ॥
हाटक पटीसी बाँही हाट पै हँसति ठाढ़ी,
बाट बिन तोलैं बाट पारैं बहुतेरिनि की ।
गाहक बुलावै सैन करै दैन करै सौदा,
नैननि मुकरि जाइ मुकरि मुकेरिनि की ॥३१॥

पथिक बधू वर्णन

दोहा—सदा बसै जे पन्थ मैं, पथिक बधू ते जानि।
बनिजारिनि, जोगिनि, नटी, कंघेरिनि सुख खानि ॥३२॥

बनिजारिनि

सवैया—

एड़िन ऊपर घूमत घाघरौ, तैसियै सोहति साल्हू की सारी।
हाथ हरी हरी छाजै छरी, अरु जूती चढ़ी पग फूँद फुँदारी॥
उँचे उरोज हरा घुघुचीनि कै, हाँकहि हाँकति बैल निहारी।
गातनहीं दिखराइ बटोहिन, बातनहीं बनिजै बनिजारी ॥३३॥

जोगिनि

कबित्त—डोलै बन बन जोर जोबन के जाँचकनि,
राग बस कीनै बनबासी बीझि रहे हैं।
मोहे महा पन्नग अनेक अनगन खग,
कान दै दै कोल भील केते रीझि रहे हैं॥
ठाढ़े ढिग बाघ बन चीते चितवत दृग,
झाँख मृग-साखामृग रीझि रीझि रहे हैं॥
× × × ×
× × × × ॥३४॥

नटी

सवैया—

पातरे अंग उड़ै बिनु पाँखनु, कोमल भाषनि प्रेम झिरी की।
जोबनरूप अनूप निहारि कै, लाज मरैं निधिराज सिरी की॥
कौंल से नैन कलानिधि सौं मुख, को गिनै कोटि कला गहिरीकी।
बाँस कै सीस अकास में नाचत, को न छकैं छबि सोन चिरी की ३५

कंघेरिन

सवया—

साँवरे अंग सरोज से नैन, उरोज उठे अठिलाति कपोलैं।
ऐंठति सी भुज मूल उठाये, अँगूठनि चालि चबाइ सौ बोलैं॥
हाँसी मैं डारति फाँसी बिसासनि, पोहति सी चित टोहति डोलैं।
मोर पखा घुघुचीनि के जेवर, जेबसौं जेवरी बेचति डोलैं॥३६॥

दोहा—जाति करम गुन अगनपन, नारि अनेक प्रकार।
ताते मैं सूक्षम कही, कछुक बुद्धि अनुसार॥३७॥

इतिश्री रसबिलासे कविदेवकृते पुर, बन, सेन्या, मारग बधू वर्णानम् नाम त्रितोयो विलासः॥३॥

चतुर्थ बिलास

दोहा—रानी राधा हरि सुमिरि, बानी देव प्रकास।
पुर, बन, सेना, पथिक तिय, बरन्यो तृतिय बिलास ।१।

कामिनी महिमा

दोहा—काम अन्धकारी जगत, लखै न रूप कुरूप।
हाथ लिये डोलत फिरै, कामिनि छरी अनूप ॥२॥
तातैं कामिनि एकहीं, कहन सुनन को भेद।
राचैं पागैं प्रेमरस, मेटैं मन के खेद ॥३॥
रची राम संग भीलिनी, जदुपति संग अहीरि।
प्रबल सदा बनबासिनी, नवल नागरिन पीर ॥४॥
कौन गनै पूरब नगर, कामिनी एकै रीति।
देखत हरै बिबेक कौं, चित्त हरे करि प्रीति ॥५॥

सवैया—

ठाढ़ो है बाग मैं भागभरी, मनौंकाम भुजंगम के बिष चोई।
आनिपरी चित बीच अचानक, जोबनरूप महारस मोई॥
नागरि धौं पुरबासिनि हीके, गँवारि किधौं बनबासिनि कोई।
को गनै भोजन की जनकी, पनकी तनकी मनकी मति खोई ॥६॥

अष्टाङ्गवती नायिका के अष्टाङ्ग

दोहा—जा कामिनि में देखिये, पूरन आठहुँ अङ्ग।
ताही बरनैं नायिका, त्रिभुवन मोहन रङ्ग ॥७॥
पहिलै जोबन, रूप, गुन, सील, प्रेम, पहिचानि।
कुल, बैभव, भूषन, बहुरि, आठौं अङ्ग बखानि ॥८॥

जोबन वर्णन

दोहा—बालापन कौं भेदि कै, छबि कौं अङ्कुर होइ।
जग मोहै दिन दिन बढ़ै, जोबन कहियै सोइ ॥९॥

अज्ञात यौबना

सवैया—
खेलत ही मैं भयौ कछु खेल, खिलावन वारी भईं सब सौतैं।
देव जू चौंकि चितै चकि वै, सु चबाव करैं उठि आपनी गौतैं॥
औरई साँझ तैं सूर उदै लगि, औरई साँझ लौं सूर उदौ तैं।
रूप की ओप अनूप घरी पल, बालि सी बाढ़त काल्हि परौं तैं ।१०।

कबित्त—लह लही बैस उलहीहै दुलही की देव,
उरमैं उरोज जैसे उभरत पाग है।
अनगिने दिननि अनूप दुति आनन की,
देखत ही उपजत अनूठो अनुराग है॥
तैसीये तरल तीखे अनसीखे नैननि तैं,
निचुरैं निपुन सूधौ भावते कौ भाग है।
सोने से सुरंगनि तैं चम्पा चारु अंगनि तैं,
रंगनि सौं ऊँचत तरंगनि सुहाग है ॥११॥

ज्ञात यौबना

सवैया—

पीछे तिरीछे कटाछिन सौं, इतवैं चितवैं री लला ललचोहैं।
चौगुनौ चैन चबाइनि कै, चित चाइ चढ़े हैं चबाइ मचो हैं॥
जोबन आयौ न पाप लग्यौ, कबि देव कहैं गुरु लोग रिसोहैं।
जो मैं लजैये औ जैये जितैं, तितैं पैये कलंक चितैये जो सोहैं।१२।

रूप वर्णन

दोहा—देखत ही जो मन हरै, सुख अँखियन को देइ।
रूप बखानैं ताहि कौ, जग चेरौ करि लेइ॥१३॥

कबित्त—कुन्दन से अंग नव जोबन सुरंग उठे,
उरज उतंग धन्य वै जु परसतु है।
सोहति किनारी वारी तन सुख सारी देव,
सीस सीसफूल अध खुल्यौ दरसतु हैं॥
बेंदिया जराव बड़े मोतिनि सौं नीकी नथ,
हलत तरौंननि तैं रूप सरसतु हैं
गोरी गज गौनी लौनी नवल दुल्हैया तेरे,
भाग भरे मुख पै सुहाग बरसतु हैं॥१४॥
घूँघट खुलत अब उलट ह्वै जैहैं देव,
उद्धत मनोज जग जुद्ध जूटि परैगो।
को कहिं अलीक बात सोकहैं सु रोक हिय,
लोक तिहुँलोक की लुनाई लूटि परैगो॥

दैवनि दुराव मुखनान्तर तरैयनि को,
मण्डल मटकि औ चटकि टूटि परैगो।
तो चितै सकोचि सोचि मोचि मद मूरछिहै,
छोरतैं छपाकर छता तें छूटि परैगो ॥१५॥

गुण वर्णन

दोहा—कायिक बाचिक करम करि, बाँधै सबको चित्त।
राव रंक रीझैं गुनहिं, होइ जगत को मित्त ॥१६॥

सवैया—
गाइ बजाइ नचाइ कै नारि, रिझाइ कैं नाथ बताइबौ सोह्यौ।
चित्र बिचित्र कला कबिता, रस देव जू चातुरी सौं चित पोह्यौ॥
भोजन भूषन भाषनि भेष, बिसेष रचै रचना रुचि रोह्यौ।
रूप उजागरि राधे अहौ, गुन आगरि तैं जगमोहन मोह्यौ।१७।

कवित्त—बेदनिहूँ गने गुन जाके अनगने भेद,
भेद बिन जाकौ गुननिरगुन हूप है।
कितक बिरंच्यौ ऐसो रचै रुचि रंचौ महा,
सुखनि कौ संचौ जहाँ बंच्यौब्रजभूप है॥
तोही सुनि सुनि अवराधा अवराधा जस,
जानत न देव कोई कहा धौं अनूप है।
तेज है कि तप है कि सील है कि सम्पति है,
राग है कि रंग है कि रस है कि रूप है॥

शील वर्णन

दोहा– कोमल बचन प्रसन्न मन, सज्जन रञ्जन भाइ ।
दीन दया थिरता छिमा, ये कहु सील सुभाई ॥१९॥

सवैया—

भौन भरे सिगरे बृज सौंह, सराहत तेरेई सील सुभाइन ।
छाती सिरात सुनैं सबकी, चहुँओर तें चोप चढ़ी चित चाइन ॥
ए री बलाइ ल्यौं मेरी भटू, सुनि तेरी हौं चेरी परौं इन पाइन ।
सौतिहुँ की अँखियाँ सुख पावति, तो सुख देखि सखी सुखदाइन ।२०

नेहभरी तैं सदेहखरी, रस-मेह झरी अँखियानि बिसेखी ।
भौंहनि मैं झलकै मुसुकानि सी, काम कमान मनौ अवरेखी ॥
देव सुभाव रखै मधुबोल, सुधानिधि मैं न इती रुचि पेखी ।
कैसैहूँ क्यौहूँ रिसात जु पैं, सरसात घनी अरसात न देखी ।२१।

प्रेम वर्णन

दोहा—सुख दुखहूँ मैं एकसी, तन मन बचननि प्रीति ।
सहज नेह नित नित नयो, तहाँ सुप्रेम प्रतीति ॥२२॥

सो संजोग बियोग करि, द्वै बिधि बरनत प्रेम ।
सुखदायक संयोग मैं, दुख वियोग कौ नेम ॥२३॥

कबित्त—रीझि रीझि रहसि रहसि हँसि हँसि उठैं,
साँसैं भरि आँसू भरि कहति दई दई ।

चौंकि चौंकि चकि चकि औंचकि उचकि देव,
छकि छकि बकि बकि उठति वई वई ॥
दुहुँन के गुन रूप दोऊ बरनत फिरैं,
पल न थिरात रीति नेह की नई नई ।
मोहि मोहि मोहन कौं मन भयौ राधामय,
राधा मन मोहि मोहि मोहन भई भई ॥२४॥

संयोग प्रेम

कबित्त—औचक अगाध सिन्धु स्याही को उमगि आयौ,
तामैं तीनौं लोक बूड़ि गये एक संग मैं ।
कोरे कोरे कागद लिखे ज्यौं कारे आखर ज्यौं,
न्यारे कर बाँचैं कौ न राचैं चित भंग मैं ॥
नैननि मैं तिमिर अमावस की रैनि अरु,
जम्बू रसबिन्दु जमुना जल तरङ्ग मैं ।
यौंही मन मेरौ मेरे काम कौ न रह्यौ माई,
स्याम रङ्ग ह्वै करि समानौ स्याम रङ्ग मैं ।२५।

वियोग प्रेम

कबित्त—तेरौ कह्यो करि करि जीउ रह्यो जरि जरि,
हारी पाँइ परि परि तौन कीनी सम्हार ।
लालन बिलोकि देव पल न लगाये तब,
यौं कल न दीनी तैं छलन उछलनहार ॥

ऐसे निरमोही सौं सनेह बाँधि हौं बँधाई,
आय बिधि बूड़्यो व्याध बाधा सिन्धु निराधार।
ए रे मन मेरे तैं घनेरे दुख दीने अब,
एकबार दैकैं तोहिं मूँदि मारौं ए कबार।२६।

कुलाचार वर्णन

दोहा—गुरुजन-पूजन धर्मपन, लीने लोक बिचार।
लाज काज गौरव जहाँ, सोई कुल आचार॥२७॥

सवया—

आपने ऊकि रहैं अवलोकि, बिलोकिक एक सदा निरजोसी।
लाजके काज सुकाज करैं, सुनि साधु समाज असीस दयोसी॥
कीने प्रसन्न सबै करि सेवन, काहू कहूँ गुरुदेव न दोसी।
दोकुल निर्मल मोकुल कीरति, गोकुल मोकुल नारि न तोसी।२८

कवित्त—तेरे अनगिने गुन रतन जतन करि,
गुरुजन पावैं परि प्रेम पखियन मैं।
पार न लहत गहराई न गहत देव,
केवल सुधाई मधु जैसी मखियन मैं॥
ए री कुल बधू मेरी राधे ठकुराइनि,
हौं पाइनि परत तेरी चेरी सखियनि मैं।
सील की सलिल निधि बिधि तू बनाई जाके,
राजति जहाज भरी लाज अँखियन मैं॥२९॥

बैभव वर्णन

दोहा—जहाँ सहज सम्पति सु पुनि, प्रभुता कौ अभिमान ।
थिरता गति गन्भीरता, बैभव ताहि बखान ॥३०॥

कबित्त—फटिक-सिलानि सौं सुधार्‌यौ सुधा-मन्दिर,
उदधि दधि कौ सो उफनाय उमगै अमन्द ।
बाहर तैं भीतर लौं भीतिन दिखाई देत,
छीर के से फेन फैली चाँदनी फरस बन्द ॥
तारा सो तरुनि तामैं देव जगमग होत,
मोतिन की जोति मिल्यौ मल्लिका कौ मकरन्द ।
आरसी से अम्बर मैं आभा सी उजारी ठाढ़ी,
प्यारी राधिका कौ प्रतिबिम्ब सौं लगत चंद ।३१

कबित्त—रूपके महल धूप अगर उदार द्वार,
झँझरी झरोखा मूँदे चारु चिकराती मैं ।
उद्ध अध मूल तूल-पटनि लपेटे चहूँ,
लपट सुगन्ध सेज सुखद सुहाती मैं ॥
सिसिर के सीत प्रिया प्रीतम सनेह दिन,
छिनसे बिहात देव राती नियराती मैं ।
केसरि कुरङ्ग-सार रङ्ग से लिपत दोऊ,
दुहू मैं दिपत औ छिपत जात छाती मैं ।३२

भूषण वर्णन

दोहा—चमत्कार रचनानि करि, बहुबिधि माड़ै गात ।
भूषन भेष बिसेष कहुँ, अलंकार अवदात ॥३३॥

कबित्त—कंचन किनारीवारी सारी तास की मैं आस,
पास तनी मोतिन की झालरि इकहरी ।
सीसफूल बैंना बेंदी बेसरि औ बीरनि मैं,
हीरनि की भीर मैं अधिक छबि छहरी ॥
चन्दसे बदन भान भई वृषभान जाई,
यौबन लुनाई की लुवनि कैसी लहरी ।
काम घाम घी ज्यौं पिघलत घनस्याम मन,
क्यौं सहै समीप देव दीपति दुपहरी ॥३४॥

गोरे मुँह गोल हरैं हँसति कपोल बड़े,
लोचन बिलोल लाल लौने लीनी लाजपर ।
लोभा लागे लाल लखिबे कौ कबि देब छबि,
गोभा से उठत रूप सोभा के समाज पर ॥
बादले की सारी बर दामन किनारी,
जगमगैं जर तारी झीनी झालरि के साज पर ।
मोती गुहे कोरन चमंकै चहूँ ओरन,
सु तोरन तरैयनि की तानी द्विजराज पर ॥३६॥

पूर्ण अष्टांगवती नायिका वर्णन

सवैया—

सुन्दर जोबन रूप अनूप, महागुन ग्यान की रासि मची तूँ ।
सील भरी कुल दोऊ उजागर, नागरि पूरन प्रेम-पची तूँ ॥
भागकी भौन सुहाग सौं भूषित, भूमि की भूषन साँची सची तूँ ।
आठहूँ अंग तरंगत रंग, सबै सुचि सञ्चि बिरञ्चि रची तूँ ॥३६॥
थोरीयै बैस बिसाल लसैं, कचटेढ़ी चितौंनि मैं सूधी चलै पथ ।
कौंवरे अंग करेरे कुचा-वृत, लाज-लची गुन ऊँचे मनोरथ ॥
लंक लग्यो उमग्यो उर देव, सुबोलैं हरैं गरुई सी गिरा लथ ।
नैन बड़े बड़े नैसक अंजन, मोती बड़े बड़े नैसक सौं नथ ॥३७॥

दोहा—एहि बिधि आठौं अंगकरि, पूरन नारि जु होइ ।
तिहिं बरनौं हौं नायिका, जिहिं बरनैं कबि लोइ ।३८।
केसव आदिक महाकबि, बरने जो बहु ग्रन्थ ।
हौं हूँ बरनत ताहिं अब, सरस अपूरब पन्थ ॥३९॥
एक बार जद्यपि कही, मति प्राचीन प्रकास ।
भाव सहित सिंगार रस, रचिकै भाव बिलास ॥४०॥
रसबिलास रचि ग्रन्थ सौं, कहत दूसरी बार ।
वही नायिका भेद सब, सुनहु नवीन प्रकार ॥४१॥

इतिश्री रसबिलासे कविदेवकृते अष्टांग नायिका वर्णनम्
नाम चतुर्थो बिलासः ॥४॥

पंचम बिलास

दोहा—रानी राधा हरि सुमिरि, बानी देव प्रकास।
रसबिलास अँग नायिका, भयो चतुर्थ बिलास ॥१॥

नायिका भेद वर्णन

दोहा—आठ भेद नायिका कै, बरनत हैं कबि सन्त।
भेद भेद प्रति होत हैं, अन्तर भेद अनन्त ॥२॥
जाति, कर्म, गुन, देस अरु, काल, वयःक्रम जानु।
प्रकृति, सत्व नायिका कै, आठौं भेद बखानु ॥३॥

जाति भेद

दोहा—पद्मिनि, चित्रिनि, संखिनी, हस्तिनि कहौं बिचारि।
जाति भेद यहि भाँति सौं, कही नायिका चारि ।४।

पद्मिनी

दोहा—हंस भाष हंसै गमन, लघु भोजन मृदु हास।
सती सत्य रुचि सील सुचि, पद्मिनि पद्म सुबास ॥५॥

कबित्त—सरद के बारिद मैं इन्दु सी लसत देव,
सुन्दर बदन चन्द्रिका सी चारु चीर है।
सौंधौं सुधा बिन्दु मकरन्द की मुकतमाल,
लिपत मनोज तन मञ्जु री सरीर है।

सीलभरी सलज सलौनी मन्द मुसुकानि,
राजै राजहंस-गति गुननि गहीर है।
घेरी चहुँओरनि तैं मोरन की भीर भारी,
मोरन की भीर मैं चकोरन की भीर है ॥६॥

चित्रिणी

दोहा—मोर भेष भूषन बसन, गज गति अति सुकुमारि।
चञ्चल नयनी चित हरनि, चतुर चित्रिनी नारि ॥७॥

कवित्त—देखी न परत देव देखिबे की परी बानि,
देखि देखि दुति दिखसाध उपजत है।
सरद उदित इन्दु बिन्दु सी लसत लखै,
मुदित मुखारबिन्द इन्दिरा लजत है॥
अद्भुत ऊष सी पियूष सी मधुरबानी,
सुनि सुनि श्रवननि भूख सी भजत है।
मन्त्री कर्‌यो मैन पर तन्त्री कर्‌यो बैन पर,
बिना तार तन्त्री जीभ जन्त्री सी बजत है।८।

संखिनी

दोहा— दीरघ सिर कर चरन कटि, लघु नितम्ब कुच नैन।
स्वल्प छिमा सन्तोष मुद, संखिनि तिक्त न बैन ॥९॥

सवैया—

कोपभरी लघु गुप्त परी, उर बात चलै तरु डार सी डोलै।
काम छरीसी लगै उछरीसी, फिरै मछरीसी सुभाव बिलोलै॥

भौंह चढ़ी कुटिलै अँखियाँ, अति तीखी कटाछिनि चित्त न खोलै।
प्यारे सौं रुसि रहै बिन दोष, बिना रिस रोस रिसानी सी डोलै।१०

हस्तिनी

दोहा—थूल सुकर पद अधर कटि, भारी कुच भुज जानु।
ठिगुनी बहु भोजन गमन, हस्तिनि तिय पहिचानु।११

कबित्त—गुलगुली गोल मखतूल कौसौं गैदुवा,
गड़ै न गुड़ी जी मैं जऊ करत ढिठाई सी।
चोर की सी गठरी छुटै न छतियाँ तें मुख,
लागत अँधियारे हूँमैं लागत मिठाई सी॥
भूखे कौसौ भोजन न भूलत सवाद कबौं,
नेकहूँ उमेठै नये नेह की इठाई सी॥
सुरत सँयोग कौ नहीं न करै निसि दिन,
भोग की गुपत गुपचुप की मिठाई सी॥१२॥

कर्मभेद

दोहा—कर्मभेद करि नायिका, तीनि प्रकार बखानि।
सुकिया, परकीया, कहूँ, अरु सामान्या जानि॥१३॥

सुकिया

दोहा—कायिक बाचिक मानसिक, पतिरति तीनों कर्म।
तासौं कबि सुकिया कहैं, लिये सकल कुल धर्म॥१४॥

कबित्त—सीलभरी बोलति सुसीलबानी सबही सौं,
देव गुरुजननि की लाज सौं लची रही।

कोमल कपोल पर दीसै हरदी सी दुति,
चूनी सी सकुच मुसुकानि मैं मची रही ॥
लालन की लाली अँखियानि मैं दिखाई देत,
अन्तर निरन्तर ही प्रेम सौं पची रही ।
कुँवरि किसोरी मुख मोटी करै सखियन सौं,
चोरी चोरी चितगति रोरी सी रची रही ।१५।

परकीया

दोहा—कायिक बाचिक पतिहिं रत, मनसा उपजत जुक्ति ।
गुप्त प्रेम पर पुरुष कौं, सो परकीया उक्ति ॥१६॥

कवित्त—मारी बिपतिन को पति उछङ्ग पौढ़ी गूढ़,
कोर मैं अँकोरी देव काम गति पकती ।
मानैहूँ सुरति पै सुरति कहूँ लागी देव,
भौंहनि मरोरि मुरि उरते खिसकती ॥
नीति की चितौंनि चित बीच चुभि खुभि रहैं,
ऊची रहै आँखिन करेजनि कसकती ।
सपनैं कैं मिस करि रोइ उठै रिसकरि,
मोही मनहीं मन मसूसति सिसकती ॥१७॥

सामान्या

दोहा—बाचक ही सबसौं रचै, करै जगत मनुहारि ।
तनमन धन चाहै सदा, सो सामान्या नारि ॥१८॥

सवैया—

हेरतही हरिलेत हियो, बस बिस्व कियो रसकी बतिया मैं।
जोबन रूपकी ओप अनूप, सुन्यौं गुन ये तौ न काहूतिया मैं॥
कन्त कियौ धनवन्त निहारि कै, चूकत ना अपनी घतिया मैं।
हाय दई हँसि हौंस भरै, मुदरी कर देखि धरी छतिया मैं।१९।

गुण भेद

दोहा—कहौं सत्त, रज, तम, त्रिगुन, उत्तम मद्धिम अन्त।
तीनि भाँति गुन भेद करि, कहत नायिका सन्त।२०।
सत्त प्रकृति उत्तम कह्यौ, मध्यम रजस सुभाइ।
अन्त तमोगुन प्रकृति तिय, बरनत कबि समुदाइ॥२१॥
अनहित सौं हित उत्तमा, सम सौं सम मधि जानि।
अधमा हितहू सौं न हित, तीनौं तिय पहिचानि।२२।

कबित्त—धोखेहूँ कहौं जौ कटु बोल तौ कटाऊँ जीभ,
छार डारौं आँखिनि की आँसू झलकनि पैं।
कौन कहै कैसी सौति सौ तौ ठकुराइनि लिखी,
हैं बृज बालनि के भाल फलकनि पैं॥
ह्वै रही न जीकी हौं न जीकी दुचिताई रहौं,
पीकी प्रान प्यारी लहौं नीकी ललकनि पैं।
दूजौ नहीं देव पूजौं राधिका के पग पर,
पलकत लाऊँ धरि ध्यान पलकनि पैं॥२३॥

देश भेद

दोहा—दिसि दिसि देस बिदेस की, नारी और अनन्त ।
नीरस नारि निहारि तेहिं, बरनत नाहिं सुसन्त ॥२४॥

मध्य देश बधू

सवैया—

कोबिद कामकला सकलानि, कलानिधि सी गुनरूप निधानै ।
गीत सँगीत बिनीत सदा, सुभकर्म पुनीत सबैं सुख सानै ।
देव अचारि बिचारि रची, सुचि साँची सची रचिकैं पहिचानै ।
अन्तर बेद बिचक्षन नारि, निरन्तर अन्तर की गति जानै ॥२५॥

मगध बधू

कबित्त—प्रेम मद मगन उछाह उमगनिभरी,
मग न धरति पग घूमति ज्यौं घनियै ।
खौलैं उर बाहैं रति पै रति अथाहैं,
उपभोग सिन्धु माहैं परिरम्भ सुख सनियै ॥
सुन्दर सरस रस बस कीनौं प्यारो पिय,
न्यारो हिय तें न होत देव बिधि बनियै ।
रँहसि रिसावै काम पावक दगध पीर,
मगध की माननि अगाध गुन गनियै ॥२६॥

कौशल बधू

कबित्त—सील रुचि रुचि संचि रुचिर बिरंचि रची,
रंचक सी सचीरूप बंचित सी दामिनी ।

बिमल बिचित्र बिधि चित्र की सी लिखी चारु,
रचना चरित्र सो बिचित्र गति गामिनी ॥
भोग उपभोग अंग संग सुख जोग जामैं,
प्रेम सौं प्रसन्न लाज सतत बिरामिनी ।
देव पतिदेवता दिपति दुति देवतासी,
देखी जग कुसल एक कौसल कुलकामिनी ।२७

पाटल बधू

कबित्त—चञ्चल दृगञ्चल चपल चितवति चोरि,
चितवत चारु चढ़ी चारुता प्रगट ही ।
हौंस भरी हँसति लसति हुलसति हियैं,
बिलसति बाल मनौ नेह कौ निकट ही ॥
देव हरषत बरसत मनौ मैन रस,
सरस बचन रसना सो रचि रटही ।
मोह की अँध्यारी मैं उजारी ह्वै रमति रति,
प्यारौ पटना कौ पट लंपट निपटही ॥२८॥

उत्कल बधू

कबित्त—बिरज बिराजै रज रजत कियो है पोति,
गुंज अलि पुंजन लै कीनी कुंजगली सी ।
मूँदे मुख बाहिर बिनत बिन बात डोलैं,
अन्तर निरन्तर उनींदी भाँति भली सी ॥

रहत अवासही सुबास सो बसायो बन,
देव अनुकूली मन फूली तन फली सी।
खेलति सहेलिन नवल बाल चेलिन मैं,
देखी उतकल बधू अम्बुज की कली सी ॥२९॥

कलिंग बधू

कबित्त—मदन के मद मतवारी नव झूमि झाकैं,
सदन थिरात न थिराति रति रंग ना।
प्रीतम के रूप को मया सी अचवत तन,
प्यासीयै रहति जौ लहत सुख संग ना॥
प्रेम रस बस प्यावै प्यार सों अधर रस,
लागत नखच्छत रुचिर भूष भंग ना।
अंग अंग उमगि अनंग उपजावति,
अलिङ्गन अघात न कलिङ्ग की कुलाङ्गना।३०

कामरूप बधू

सवैया—

तीनिहुँ लोक नचावति फूँक मैं, मन्त्र के सूत अभूत गती है।
आप महागुनवन्ति गुसाइनि, पाइनि पूजत प्रान पती है॥
पैनी चितौनि चलावति चेटक, को न कियो बस जोग जती है।
कामरू कामिनि काम कला, जग मोहिनि भामिनि भानमती है।३१

बंग बधू

सवैया—

कंचन मण्डित रूपभरी, पहिरे पट लाल प्रकास बिलासिनि ।
सुन्दर स्याम लची अभिराम, धरै सिर दाम गरें मृदु मालिनि ॥
संगर मैं न छुटै कटि सौं, लपटी प्रिय प्रानन आनन पालिनि ।
देव रहैं हियरैं लगि कैं, करबाल किधौं बरबाल बँगालिनि ॥३२॥

बिन्ध्य बन बधू

कबित्त—ढूँढ़ति फिरति रतिकन्त के इकन्त गृह,
पति की सुरति मति मति भूली मन की ।
डोलति अकेली अकुलानी तिय केली,
रसबेली सी नबेली तलबेली अति तन की ॥
डौंड़ी कौं बजाइ छौंड़ी लाज उपजाइ नेह,
गौंड़ी नारि टौंड़ी के उरैनि प्रेमपनकी ।
झिलिमिली झाईं सी दिखाई पति झार मैं,
महौषधि की बूटी सी बधूटी बिन्धबन की ।३३।

मालव बधू

सवैया—

बोलनि चालि बिलोकनि सौं, दिनही दिन दूगुन नेह बढ़ावै ।
अंगहिं अंग अनंग तरंगनि, आदर सों उठि ओठनि प्यावै ॥
मालव देस की बाल मनोहर, बालम के चित की गति पावै ।
जोग सबै उपभोग भले करि, भाँतिनि भोग सुभोग करावै ।३४।

आभीर बधू

कबित्त—बिधि की सी असिष असेष भेष भूषन,
बिसेष सिख नख रची रेख सी सुहावती।
कर पद पदम पदमनैनी पद्मिनी की,
पदम सी सोभा सबै देखन मैं आवती॥
रमा रूप अधम सुरंभा कौ प्रारम्भन दै,
अतुल मनोज ओज आगिन सिरावती।
अंगनि अभूति अति आभा अभिरामन कौं,
अभिराम आभरन आभीरिनि भावती॥३५॥

बिराट बधू

कबित्त—अरुन बसन सदा सोहत तरुनि तन,
कोमल करन चारु मार सर मार की।
पिय के जियनि जाम प्यारी हिय बसै प्रेम,
रस बस छाकी वाकी थाकी रति भार की॥
तीषे नषिया तन अघात न अधर पान,
मानति सुरति रुचि सुरतरुडार की।
बारनगमनि बड़े बारन की बर तनु,
चम्पक बरनि बर बनिता बिराट की॥३६॥

कुङ्कल बधू

कबित्त—गोरी गजराज-गति गुननि गहीर-मति,
भारे भाग रमति सुरति सों सकोचनी।

आलिंगन चुम्बन अधरपान नखदान,
मान सों बचन रचना सों रुचि-रोचनी ॥
जानैं रीति जीकी पहिचानैं प्रीति नीकी,
सुखदानी सबही की प्यारी पीकी दुखमोचनी ।
केसरि करै न सरि कोकनक जाकी दरि,
कोकनदरी की नारि कोकनद लोचनी ॥३७॥

करैल बधू

कबित्त—चम्पा के बरन तन चन्दन बसायो बन,
चन्दन से बसन बसे चन्दन के वारि हैं ।
खग मृग मीन जल थल के अधीन होत,
गुञ्जरत भौंर पुञ्ज कुञ्जनि बिसारि हैं ॥
कौन करे सेव कहि देव ताहि देखत ही,
मोहि मन देवता करति मनुहारि हैं ।
× × × ×
× × × × ॥३८॥

द्राविड़ बधू

कबित्त—देवता दरसियतु देवता सरस देव,
एहि बिधि और नहीं देव नारी नागरी ।
सहज सुभाइ सुचि संचि रुचि सीलमति,
कोमल बिमल मन सोभा सुख सागरी ॥

सुन्दर सुबास बास कोमल कलानिधान,
जानत तहाँ न ताहि चाहि चित आगरी ।
देबी देस द्राबिड़ की सुन्दरी निबिड़ नेह,
गुननि अनूप रूप ओपनि उजागरी ॥३९॥

तिलंग बधू

कबित्त—साँवरि सुघर नारि महासुकुमारि सोहै,
मोहै मन मोहन कौ मदन तरंगनी ।
अनगिने गुननि के गरब गहीर मति,
निपुन सँगीत गीत सरस प्रसंगनी ॥
परम प्रबीन बीन मधुर बजावै गावै,
नेह उपजावै यौं रिझावै पति संगनी ।
चातुर सुभाय बंकभौंहनि दिखाय,
देव बिंगनि अलिंगन बनावति तिलंगनी ॥४०॥

करनाटक बधू

कबित्त—सौंधै भरी सूधी सी सुधानिधि सुधारी बिधि,
सहज सुबासनि की रासि लहियति है ।
जगमगैं बसन सुरंग रँगमगे अंग,
मदन तरंगनि के रंग चहियति है ॥
बोलनि बिलोकनि चलनि चतुराई,
चारुताई सुघराई नीकी रीझि रहियति है ।
प्रेम परिपाटी रूप जोबन की पाटी पढ़ि,
देव दुति साटी करनाटी कहियति है ॥४१॥

सिन्धु बधू

कबित्त—बसुधा कौं सोधि कैं सुधारि बसुधारनि सौं,
सरब सुधारनि सुधारनि सुबेस की।
धरम की धरनी धरा सी धाम धरनी की,
धर धरनी की धन्य धन्यता धनेस की॥
सिद्धन की सिद्धि सी असिद्धि सी असिद्धन की,
साधता की साधक सुधाई सुधाबेस की।
सुधानिधि दानी सुधानिधि की सुसुद्ध बिधि,
सिन्धुर गमनि गुनि सिन्धू सिन्धु देस की॥४२॥

गुजरात बधू

कबित्त—छिति की सी छौनी रूप रासि की इकौनी,
बिधि चाव सों रचौनी गोरी कुन्दन से गात की।
देव दुति दूनी दिन दिन और हूनी ऐसी,
अनहोनी कहूँ कोई गोरी दीप सात की॥
रति लागै बौनी जाकी रंभा रुचि बौनी,
लोचननि ललचौनी मुख जोति अवदात की।
इन्दिरा अगौनी इन्दु इन्दीबर औनी,
महासुन्दर सलौनी गज गौनी गुजरात की।४३।

मारवाड़ बधू

कबित्त—चित्र की सी लिखी चारु चित्रिनी बिचित्र गति,
रची है बिरंचि निज रचना बिचार की।

रंच को बची न रुचि रचिनि बिरंचि बाच्यौ,
संचित सुचित्त सुचि सोभा सुख सार की ॥
रूप की सी मुद्रिका समुद्र गुन सील की सी,
आदर उदारताई देवतरु-डार की ।
काम की निसैनी कमला सी सुख दैनी,
पिय प्यारी पिकबैनी मृगनैनी मारवार की ।४४।

कुरुदेश बधू

कबित्त—नख सिख नेह भरी मदन तरंगनि सौं,
अंग अंग देव रंग रंग रीझि रहिये ।
साँचैं भरि काढ़ी मानौं नाचैं दृग खंजन सु,
देखैं बिरहागिनि की आँचै नहिं सहिये ।
सोहै महासुन्दरि बिमोहै मन मुनिन के,
को है ऐसी दूसरी सलोनी नारि लहिये ।
गोरी सी किसोरी चितवनि बीच चोरी करै,
भोरी कुरुदेस की कुरंग नैनी कहिये ॥४५॥

कुरमी बधू

सवैया—

नासिका कीर लकीर सी भौंहनि, तीर सी ताकनि है पिकबैनी ।
भौंर अभीरनि भीतर भीर, सुभाइ भरी सु उभै रस दैनी ॥
धीरज देव अधीरज होत, चितौनि चितौति अधीरज पैनी ।
पीर हरै करबीर की कामिनि, छीरज से मुख नीरज नैनी ।४६।

पर्वत बधू

कबित्त—पंकज से नैन बैन मधुर पियूष जैसे,
अधरनि धराधर सुधारस सरबत की।
देव कोई वाके जोग भोग वै अखण्ड सुख,
भौंहनि प्रकासी जोति कासी करवत की॥
सील के सुभाइनि कहूँ न काहू कबहूँ की,
जबहूँ की तबहूँ करत गरबत की।
इन्दिरा सरूप इन्दुबदनी अनूप रूप,
जोबन उँजारी पियप्यारी परबत की॥४७॥

भुटन्त बधू

कबित्त—चेटक सी चाल चटकीलो रंग अंगनि कौं,
चोट सी चलावै डीठि गति है मतंग की।
चुम्बन की हौंसैं उपजावति मयंक मुखी,
सारी सी पढ़त बैन दारौं दुति दन्त की॥
मोहैं देव देवतनि मोहै मुनिहूँ को मन,
कन्त को अखण्ड धन मोही रति कन्त की।
घन बन झारनि मैं सघन पहारनि मैं,
दामिनि सी देखियति कामिनि भुटन्त की।४८।

काश्मीर बधू

कबित्त—जोबन के रंग भरे ईंगुर से अंगनि पै,
एड़िन लौं छबि छाजै केसन के भीर की।

उचके उचौंहैं कुच भार झलकति झीनी,
झिलमिली ओढ़नी किनारीदार चीर की ॥
गुलगुले गोरे गोरे कोमल कपोल सुधा,
बिम्ब बोल इन्दुमुखी नासिका ज्यों कीर की ।
देव दुति लहरात छूटे छहरात केस,
कोरी जैसी केसरि किसोरी कासमीर की ।४९।

सोबीर बधू

कबित्त—अम्भोबिधि कासु तासो अम्भोजनि परदम्भो,
भोजन अदम्भोदित दुति है सरीर की ।
आरम्भित जोबन निदम्भ करै रम्भा रुचि,
रंभोरु सुगम्भीर गुराई गुन भीर की ॥
चन्द से बदन मन्द हाँसी की अमच्छ बिस्व,
स्याम मकरन्द बास चन्दन के चीर की ।
काम हय सुन्दरा सी देव काम कन्दरा सी,
इन्दिरा कौ मन्दिर सु सुन्दरि सुबीर की ।५०।

इतिश्री रसबिलासे कविदेव कृते जाति, कर्म, गुन, देश भेदादि नायिका वर्णनम् नाम पंचमो बिलासः ॥५॥

षष्टम बिलास

दोहा—रानी राधा हरिसुमिरि, बानी देव प्रकास।
जाति कर्म गुन देसतिय, पंचम सुरस बिलास ॥१॥

कालभेद नायिका वर्णन

दोहा—आठ अवस्था भेद करि, होत आठ बिधि काल।
बरनौं ता संयोग तें, आठ भाँति की बाल ॥२॥
प्रथम कहौं स्वाधीनपति, कलहन्तरिता होइ।
अभिसारिका बखानिये, बिप्रलब्धिका सोइ ॥३॥
खण्डिता अरु उत्कण्ठिता, बासकसज्जा बाम।
प्रोषितपतिका नायिका, आठौं बिधि अभिराम ॥४॥

स्वाधीन पतिका

दोहा—मनसा बाचा कर्मना, जाकौं पति आधीन।
सो कामिनि स्वाधीनपति, पतिबस करै प्रबीन ॥५॥

कबित्त—जासौं हँसि एक बार एक बात कहिबे कौ,
हौंसनि मरत कहौ कौन बृज बाल है।
सूधेई सुभाइनि सुदास करि राख्यो हरि,
होत न उदास क्यौंहूँ एतौ भाग भाल है॥
देव अब आस पूजी तू जी मैं अदूजी बसी,
दूजी तिय भूलैहूँ न देखत गुपाल है।

पाँय परि राखी अँखियानि भरि राखी,
हियरा मैं धरि राखी करि राखी कण्ठमाल है।६

कलहन्तरिता

दोहा—प्रेम अजीरन कोप जुर, लंघन पिय संयोग।
कलहन्तरिता है दुखी, सहनैं बिथा बियोग ॥७॥

कबित्त—सखिन के सोच गुरु-सोच मृगलोचनि,
रिसानी पिय सौं जु उन नैक हँसि छुयो गात।
सहज सुभाइ मुसुकाइ उठि गये इह,
सिसकि सिसकि निसि खोयो पायो परभात ॥
कौन जानै बीर बिनु बिरही बिरह बिथा,
हाय हाय करैं पछताय न कछू सुहात।
बड़े बड़े नैननि तें आँसू भरि भरि देव,
गोरो मुख भोरो भोरो ओरो सो बिलानो जात।८

अभिसारिका

दोहा—आपुहिंते उठि जो चलै, तिय पियके संकेत।
निसि दिन तिमिर प्रकास कछु, गनै न संगम हेत।९।

कबित्त—सूझत न गात बीति आयौ अधरात लखि,
सोये सब गुरुजन जानि कैं बगर के।
छिपिकै छबीली अभिसार कौं किवार खोले,
खुलिगे सुगन्ध चहूँ चन्दन अगर के ॥

देवकहैं कुंजनि तैं भौंर पुंज गुंजि आये,
पूछि पूछि पीछै परे पाहरू डगर के।
देवता कि दामिनी मसाल है कि जोति जाल,
झगरो मचत जगे सिगरे नगर के ॥१०॥

विप्रलब्धा

दोहा—आपुहिं तैं संकेत बदि, बोलि पठावै धाम।
मिलहिं न जिहिंरति सदनपति, बिप्रलब्ध सो बाम।११

कबित्त—गरैं पटु रारि करैं केती मनुहारि,
दूतिकानि पगपारि, प्रीति पूरन सौं पकि रही।
नौती नवनारि नयो नेह नवधारि,
लाज काजहिं बिसारि रूप छबि सौं छकि रही॥
मिले न मुरारि आपहीं ते अभिसारि,
भेष भूषन सँभारि सूनैं कुंजनि मैं जकि रही।
मोचि दृग बारि सोच सोचति बिचारि,
देव चितै चहूँ पारि घरी चार लौं चकि रही।१२

खण्डिता

दोहा—बास करै निसि जाय कहुँ, प्रात मिलै पतिआइ।
नारि खण्डिता सौति के, चिन्ह लखैं बिलखाइ ॥१३॥

कबित्त—गात तें झरत फूल पलटे दुकूल,
अनुरागे उत जागै भाग इत बड़ भाग के।

अंजन अधर उर बीच नख रेख लाल,
जावक तिलक भाल लाग्यो मधि माँग के ॥
भौंहैं कलसौंहैं पलसौंहैं पगे पीक रँग,
रैनि जगे रति मैन सदन सुहाग के ।
लालन लजात से जम्हात बिहँसात प्रात,
आये आली मेरे गृह देत पेच पाग के ।१४।

उत्कण्ठिता

दोहा—पति आवन कौं रति सदन, जाकैं होति अबार ।
सो उत्कण्ठित जो करै, बहुबिधि सोच बिचार ।१५।

कवित्त—खरी दुपहरी हरी भरी फरी कुंज मंजु,
गुञ्जन अलि पुञ्जन की देव हियैं हारि जाति ।
सीर नदनीर तरु तीरनि गहीर छाँह,
सोवैं परे पथिक पुकारैं पिक करि जाति ॥
ऐसे मैं किसोरी भोरी को री कुम्हिलानो मुख,
पंकज से पाँय धरा धीरज सौं धरि जाति ।
सोहैं धाम स्याम मग हेरति हथेरी ओट,
ऊँचे धाम धाम चढ़ि आवति उतरि जाति ।१६

बासकसज्जा

दोहा—पति आवन कौं रति सदन, जाकैं निहचै होइ ।
सेज भेष भूषन रचैं, बासकसज्जा सोइ ॥१७॥

सवैया—

सुख सेजहिं साजि सिंगार सजे, गुहिबार सुगन्ध सबै बसिकै।
चुनि चूनरी लाल खरी पहरी, कबिदेव सुबेस रह्यौ लसिकै॥
पिय भेटिबे कौं उमही छतियाँ, सु छिपावति हेरि हियो हँसिकै।
अँगिया की तनी खुलि जात घनी, सु बनी फिरि बाँधति है कसिकै १८

प्रोषितपतिका

दोहा—पति बिदेस क्योंहूँ गयो, आगम औधि ढिठाय।
प्रोषितपतिका रैनदिन, बिरह दसा अकुलाय॥१९॥

कबित्त—बालम बिरह जिनि जान्यो न जनम भरि,
बरि बरि उठैं ज्यौं ज्यौं बरसैं बरफराति।
बीजनौं ढुरावतीं सखी जन त्यौं सीतहूँ मैं,
सौति के सराप तन तापनि तरफराति॥
देवकहैं स्वासनहीं अँसुवा सुखात मुख,
निकसै न बात ऐसी सिसकी सरफराति।
लोटि लोटि परत करोट पट पाटी लैलै,
सूखे जल सफरी ज्यों सेज पै फरफराति।२०।

प्रबत्सतभर्तिका

दोहा—नारि प्रबत्सतभर्तिका, नवमी कहत बखानि।
कालभेद नौ बिधि कहत, एकदेस मत मानि॥२१॥

कबित्त—कल न परत कहूँ लालन चलन कह्यौ,
बिरह दवा सौं देह दहकैं दहकि दहकि।

लागि रही हिलकी हलक सूखि हालै हियौ,
देव कहै गरो भर्‌यो आवत गहकि गहकि ॥
दीरघ उसास लैलै ससिमुखी सिसकति,
सुलफ सलौनो लंक लहकै लहकि लहकि ।
मानत न बरज्यौ सुबारिज से नैननि तैं,
बारिको प्रबाह बह्यौ आवत बहकि बहकि ।२२

आगमपतिका

दोहा—कही प्रबत्सतभर्तिका, ज्यौंहीं नवमी नारि ।
आगमपतिका त्यौं सुन्यो, दसमी कहत बिचारि ।२३।

कबित्त—आवन सुन्यो है मनभावन कौ भामिनि त्यों,
नैननि अनन्द आँसू ढरकि ढरकि उठैं ।
देव दृग दोऊ दौरि जात द्वार देहरी लौं,
केहरी सी खासैं खरी खरकि खरकि उठैं ॥
टहलैं करति टहलैं न हाथ पाइ,
रंग महलैं बिलोकि तनी तरकि तरकि उठैं ।
सरकि सरकि सासैं दरकि दरकि आँगी,
औचक उचौहैं कुच फरकि फरकि उठैं ।२४।

वयःक्रम भेद

दोहा—बाल वयःक्रम भेद की, तीनि भाँति कै होइ ।
मुग्धा, मध्या, प्रगल्भा, बरनतहैं सब कोइ ॥२५॥

मुग्धा

दोहा—लरिकापन भरपूरि कै, उमगै जोबन जोति।
मुग्धा तियकी अंग दुति, दिन दिन दूनी होति।२६।

कबित्त—जानि पर्‍यौ जोबन जनायो है मनोज जुर,
जगमगी जोति अंग बाढ़ति नितैनितै।
हरै हँसि हरि हरि लियौ हरि जू कौ हियौ,
हेरति हिरन नैनी हितू सौं हितै हितै।
सीखीदिन चारिक तैं तीखी चितवनि प्यारी,
देव कहै भरि दृग देखति जितै जितै।
आछी उनमील नील सुभग सरोजनि की,
तरल तनैनी मति तोरति तितै तितै ॥२७॥

उसरि उरोज गिरि हरिद्वार हिरदै तैं,
राख्यौ जिहिं सागर गहीर नाभि झषि कै।
ऐसी तरुनाई आई तासर तरंगन सौं,
सिसुता ज्यों सूरासत मिली चली चपि कै॥
तामैं मुँह सोभा कहूँ केस मिलै पर्ब सु तौ,
सर्बस सुजान दीनौ देव जपि जपि कै।
हौहूँ ऐसे ठौर ठाढ़ौ काम पुरहेत पेखि,
दीनौ मन मानिक निसंक संकलपि कै।२८

मुग्धा-रहस्य वर्णन

कवित्त—औरन कौ गौनो हौ तौ बिरह कौ औनौ होत,
तुमहीं अगौनौ दुख देखनि दुखाई यह।
ए हो मृगलोचनि सकोचनि हो सोनो तजि,
सौनों सीस धरि देह सोचनि सुखाई यह।
आऔ इत कौने कौ छिपायौ माँहि कौनै कौनै,
कौने धौं सिखाई बिष ऐसी बिमुखाई यह।
जीकौ करि जो तुम सु नीकौ करि देव पीकौ,
हीकौ करि राखौ धरि राखौ हो उखाई यह २९

मध्या

दोहा—लरिकापन जोबन जहाँ, दोऊ होत समान।
लाज काम सम मध्यमा, ताही कहत सुजान ॥३०॥

सवैया—

सावन मास सखीन मैं सुन्दरि, मन्दिर तैं निकसी बनि ज्यौं ससि।
देव जू देखि छके छबि छैल, रह्यौ न गयो हरि हारि हियौ कसि॥
डारि सकोच कह्यौ सब ऊपर, ऐसी ही भाँति रहौ बृज मैं बसि।
डीठ बचाइ नवाइ कै सीस, नचाइ कै नैनन चाइ गई हँसि।३१॥

प्रगल्भा

दोहा—लरिकापन तजि जौ रहै, तन जोबन भरि पूरि।
कहैं प्रगल्भा नायिका, जग मैं जीवन मूरि ॥३२॥

कबित्त—रेसमी सतूल साल लाल पट लीपे लेप,
भीत रैनि सीत रैनि कीन झीन झाँई सी।
नीति नग हीरन गहीरन की कान्तिन सौं,
रगमगे खम्भपति दम्भ छबि छाई सी॥
जगमगी सेज रगमगे देव देवपति,
अंग जोति सम्पति औ अंगनि जगाई सी।
ऊख में निदान हिमऊख मनि मानिकनि,
अंगनि तो चामीकर अगिनि तचाई सी।३३।

दोहा—मध्यनि संग उराहनौ, मुग्धनि सिक्षा जानि।
सुभग चेष्टा प्रगल्भा, तिहूँ सदा सुख दानि॥३४॥

मुग्धा की शिक्षा पुनः मध्या सौ उराहनो

सवैया—

वे दिन नाहिं भट्ट भय के, जब बातैं नई झुकि कै झिखई हौ।
चौप दै चित्त मैं दै रस की दिन, रातिन देव दुरै दिखई हौ॥
ढीठ भई ढिग सोवन स्याम के, कामकला लिख ज्यों लिखई हौ।
आनहिं क्यौं उर आनहुँ जू, अबतौ हरि से बिखई बिखई हौ।३५।

सुभग चेष्टा

कबित्त—औझल ह्वै आई झुकि उझकि झरोखा रूप,
झरसी झलकि गई झलकन झाँई की।
पैनै अनियारे पै सहज कजरारे दृग,
चोट सी चलाई चितवनि चञ्चलाई की।

कौन जानै को ही उड़ि लागी डीठि मोही उर,
रहै अवरोही कोई निधि ही निकाई की।
अब लगि आँखिनि की पूतरी कसौटिनि मैं,
लागि रही लीक वाके सोने सी गुराई की।३६।

दोहा—आठ वयःक्रम भेद करि, भेद भेद प्रति भेद।
होत अनेक प्रकार तैं, सुनत हरत श्रुति खेद ॥३७॥

प्रकृति भेद नायिका वर्णन

दोहा—प्रकृति भेद करि नायिका, त्रिबिधि कहत कबि लोय।
तातैं सो कफ पित्त अरु, बात प्रकृति तिय होय ॥३८॥

कफ प्रकृति

दोहा—सो कामिनि कफ प्रकृति जो, रूपसील गुनवन्त।
नेह चीकनै बचन चित, नैन केस नख दन्त ॥३९॥

सवैया—

सील सलील सलौनी सुलज्ज, सुभाइनि सज्जनता सरसाई।
नेह भरे कच लोचन देह, सुधा मधु तैं बतियाँ अधिकाई॥
दामिनि सी नख दन्तन की दुति, देखत हूँ अँखियाँ न अघाई।
अन्तर के अनुराग जितै पुनि, ऊपर ही सब देत दिखाई ॥४०॥

पित्त प्रकृति

दोहा—जाल दन्त नख नैन तन, प्रथु कुच केस अराल।
छिमा क्रोध छिन मैं दुवौ, पित्त प्रकृति सो बाल।४१।

सवैया—

बाल लसै नख दन्त कपोल, सुबारिज ओठनु ऐंठि लचावति ।
भौंहनि भाइ सुभाइ बताइकै, बातनहीं सब गात नचावति ॥
औचकही चुटकीन बजाइ कै, गाइ कै प्यारे सौं प्रेम पचावति ।
रूसि रहै कबहूँ रिसकै, कबहूँ रसना रस रंग मचावति ॥४२॥

बात प्रकृति

दोहा—रूखे तन मन बचन कछु, दूसर चञ्चल चित्त ।
भूरी बहु भोजन गमन, बातुल तिय रति मित्त ॥४३॥

सवैया—

रोख रुखाई भरी अँखियाँ, रस राखै नहीं सखियानि सौं ढीठै ।
भोजन भूरि भरी मदनभ्भर, भूरे सेवारनि बानि अनीठैं ॥
चंचल चित्त छकी मदसौं, छिन एक न छाती तैं छाड़ति ईठैं ।
काम की घात अघात नहीं, दिन राति नहीं रति रंग उबीठैं ।४४।

सत्व-भेद नायिका वर्णन

दोहा—सुर किन्नर अरु जक्ष नर, कहि पिसाच अरु नाग ।
सत्वभेद सो नायिका, बरनहुँ खर कपि काग ।४५।
तिनके लक्षन भेद सब, जानहु नीब समान ।
है प्रसिद्ध संसार मैं, जाति सुभाइ प्रमान ।४६।

सुरसत्व

कबित्त—काम की कुमारी सी परम सुखकारी यह,
जाकी है कुमारी महाभाग वा जनक के ।

सलज सुसील सुलुनाई की सलाका,
सैल-सुता सौं सलौनी बैन बीना की भनक के ॥
ए हो अबहीं तैं बनदेबी ऐसी देखी देव,
देवी ते अगन गुन गन हैं गनक के ।
कनक बनक तन तनक तनक मन,
झनक मनक कर कंकन कनक के ॥४७॥

किन्नर सत्व

सवैया—

सुन्दरि मन्दिर तैं न कढ़ी, कहूँ नैननि तैं नहिं लाज उमाँची ।
काहू सिखाई न सीख कहूँ, सखियानि सौं सील सुभाइनि साँची ॥
देव जू देखे सुने नहिं स्याम, पढ़े बिन प्रेम की पद्धति बाँची ।
आनँद तैं अनुराग भरी, बनकुंज मैं जाइ अकेलिये नाँची ।४८।

यक्ष सत्व

सवैया—

चंचल नैन बड़ी बरुनी, कुटिलै भृकुटी सु लटैं लटकारी ।
मोहनी सी मुसुकानि मनोहर, चेटक सी बतियाँ सुखकारी ॥
देव सपक्षन बाल बिचक्षन, ऐसी न जक्षन नारि निहारी ।
बासव लक्ष छके लखि लक्षन, रूप बिलक्षन लक्षन वारी ॥४९॥

नरसत्व

कवित्त—आई बरसानैं तैं बुलाई बृषभानु सुता,
निरखि प्रभानि प्रभा भान की अथै गई ।

चक चकवानि के चुकाये चक चोटनि सौं,
चौंकत चकोर चकाचौंध सौं चकै गई ॥
देव नन्द नन्दन कै नैनन अनन्द मई,
नन्द जू के मन्दिरन चन्द मई छै गई ।
कंजन कलिनमई कुंजन अलिन मई,
गोकुल की गलिन नलिनमई कै गई ॥५०॥

पिशाचसत्व

सवैया—

अन्तर खोलति नाहिं अकेलिये, डोलति ए नहिं बोलति टेरैं ।
देखिये देव जितैं तित ठौर ही, ठाढ़ी रहै घर बाहर घेरैं ॥
केतिक रूप करैं मग सामुहैं, आमुहैं सूझत साँझ सबेरैं ।
नेह भरी नव बाम दिखावति, काम के कौतुक धाम अधेरैं ।५१।

नागसत्व

सवैया—

क्यौहूँ अघाति नहीं रति रंगनि, अंग अनंग बिलास चिलोई ।
पातरी सैन सटी सी सटी सी, नटी सी नचावै कटी गुन गोई ॥
आगिली आँखिनि तैं उगलैं, कहूँ गात मिलैहुँ न जात रहोई ।
बात पिये जपिये गुरुमन्त्रनु, ज्यौं उससै रिस कै बिष भोई ।५२।

खरसत्व

सवैया—

काम के काज न लागत लाज, बुरै सुर बोलति डोलति दौरी ।
रूखिये खात नहीं अनखात, भखैं दिनरात रही परि ठौरी ॥

लाजन दाँतन खात न हूरति, केलि कुठौर करै इक तौरी ।
देखी दलूसर मूसर से भुज, धूरि भरे तन धूसर धौरी ॥५३॥

कपि सत्व

सवैया—

न्यारे मैं न्याई अन्याई करैं कहूँ, क्यौंहू पत्याइ नहीं अनुकूलै हूँ ।
औचक चौंकि चलै उछलै, छल छिद्रनि लोक छलै प्रतिकूलै हूँ ॥
धीर धराति न पीर पिराति, थिराति नहीं दिन राति ऊलै हूँ ।
भूरी सी भूरि भराव भराई सौं, राई भरी यौं भराई न भूलै हूँ ।५४।

काग सत्व

सवैया—

व्याकुल सी कुल सील उमेठि कै, है उमड़ी मड़राइ दिखावै ।
चञ्चल चित्त चितौति चहूँदिसि, एकौ घरी घर चैन न पावै ॥
औचक चौंकति बातनहीं, निज बातनि घातनि बात चुकावै ।
काक लौं बाक कुबाक सुनाइ कै, साधनि के गुन दोष बतावै ।५५।

दोहा—आठ भेद करि नायिका, बरनि कही यहि भाँति ।
ता पर बरनी जाति सो, सकल रूप गुन काँति ।५६।

इतिश्री रसबिलासे कविदेवकृते, काल भेद, वयः क्रम भेद, प्रकृति भेद एवं सत्व भेद नायिका वर्णनम् नाम षष्ठमो बिलास ॥६॥

सप्तम बिलास

दोहा—रानी राधा हरि सुमिरि, बानी देव प्रकास ।
रस बिलास बयकाल, अरु, प्रकृति सत्व सबिलास ।१।

नायिकान के संयोग मैं दस हाव, वियोग मैं दस दशा निरूपण

दोहा—यहि बिधि बरनहुँ, नायिका आठौं अंग बिभेद ।
आदि अन्त सुख की प्रकृति, जाहि बखानत वेद ।२।
सो सोहति नायक सहित, प्रति पूरुष संजोग ।
तनमन बचन अनन्त बिधि, करत करावत भोग ॥३॥
ताकै पिय संजोग मैं, उपजत हैं दस हाव ।
अरु बियोग महँ दस दसा, दारुन बिरह सुभाव ॥४॥

नायिका नायक संजोग—दस हाव निरूपण

दोहा—लीला और बिलास भनि, औ बिक्षिति बिलोकु ।
बिभ्रम किलकिञ्चित बहू, मोटाइत बिब्बोकु ॥५॥
कह्यौ कुट्टमित अरु बिहिति, ललित कह्यौ दसहाव ।
तिय पिय के संजोग मैं, उपजत सहज सुभाव ॥६॥
कपट भेष भाषनि के, लीला मैं रस हास ।
सरस भाव तन मन बचन, रुचि कौ रचन बिलास ।७।
लघु मण्डन बिक्षिति मैं, मन अभिमान बिसेष ।
बिभ्रम सो जु प्रसाद तैं, उलटे भूषन भेष ॥८॥

किलकिञ्चित इक बार भय, मुद मद रस रिस मानि ।
मिले कपट मोटाइत, मन बच आनत आनि ॥९॥

मन मैं सुख संकट कपट, प्रगट कुट्टमित हाव ।
पिय सदोष बिब्बोक बहु, दृग भौंहनि के भाव ।१०।

अपनी गौ मिस लाज छल, बिहिति आन तन आन ।
ललित सरस रचना ललित, बरनत सु कबि सुजान ।११।

लीलाहाव

कबित्त—राजपौरिया को रूप राधे कौ बनाय लाईं,
गोपी मथुरा तैं मधुबन की लतानि मैं ।
टेरि कह्यौ कान्ह सौं चलौ जू कंस चाहै तुम्हैं,
काके कहैं लूटत सुने हौं दधि दानि मैं ॥
संग के न जाने गये डगर डराने देव,
कान्ह सकुचाने से पकरि कीनै पानि मैं ।
छुटि गयौ छल सौं छबीली की बिलोकनि मैं,
ढीली परी भौहैं वा लजीली मुसुकानि मैं ।१२।

बिलास हाव

कबित्त—सहर सहर सौंधी सीतल समीर डोलैं,
घहर घहर घन घोरि कै घहरिया ।
झहर झहर झुकि झीनौं झरलायो देव,
छहर छहर छोटी बूँदनि छहरिया ॥

हहर हहर हर्षि हँसि कै हिंडोलैं चढ़ै,
थहर थहर तन कोमल थहरिया।
फहर फहर होत प्रीतमु कौ पीतपट,
लहर लहर होत प्यारी कौ लहरिया ।१३।

विक्षिति हाव

सवैया—
छूटे छवानि लौं केस बिराजत, बार बड़े तम तार हने से।
लोचन कञ्ज से खञ्जन से, दुख भञ्जन देखत जे कहने से॥
कुन्दन से तन जोबन जोति, जवाहर से पिय के लहने से।
रंग भरे तेरैं अंग भटू, बिलसैं बिनहीं गहने गहने से ॥१४॥

बिभ्रम हाव

कबित्त—आई उठि सेजतैं सुजान संग जागी निसि,
नींद निन्दनहिं लागीं नींद न परति है।
देव सुनै बोलन बुलाये बिन बोलि उठै,
बौरई मैं औरई की औरई धरति है॥
दासी मिस रोइ रोइ सौतैं उरहनौं दै दै,
झूठैं उरहनौं देखैं छतियाँ बरति है।
अनखुन लागत अनौखी कुलटेव सीखी,
उलटे बसन पैंन्हि उलटे करति है ॥१५॥

किलकिञ्चित हाव

कबित्त—धोखे धाइ धाइ धाम आई नव बाम मिले,
सीखी मिस देव स्याम मानी रँगराति है।

औचकही औचकै निसङ्क भरि अङ्क प्यारी,
पाटी परजंक साँस सकि अकुलाति है ॥
गातनि मैं दुतिराति बातनि मैं सतराति,
भौंहनि हँसाति अँखियान मैं रिसाति है ।
झारैं कर झुरी उर काम जुर झुरी लेत,
लाज पुरहरी रस धुरी ढुरी जाति है ॥१६॥

मोटाइत हाव

सवैया—

सोहति हौ तुम ही बृजभूपर, रूप रह्यौ सब ऊपर चोखौ ।
चाय सौं खेलति खेल सखी, तुम्हैं देख्यौ नहीं मुख रंचक रेखौ ॥
बालम त्यौं न बिलोकति बोलति, अन्तर खोलति ना करि ओखौ ।
जानि परै न बिराग सुहाग, तिहारौ भट्ट अनुराग अनोखौ ।१७।

बिब्बोकहाव

सवैया—

काम तमासे कहूँ निस काल्हि की, देव बसे घन सौं मन जोटैं ।
लोपक कोपक पक्षपरे इत, आवत भोर ही भौंहनि ओटैं ॥
नैन तुरंग नचाइ अचानक, ये करि तीखे कटाछ की चोटैं ।
मानहु मान के गाँव ही लूटिगे, प्रीतम साह के प्रेम की पोटैं ।१८।

कुट्टमितहाव

कवित्त—बंसीबट जमुना जी तट के निकट कहूँ,
खेलति कुँवरि राधा सखिन के पुञ्ज मैं ।

रसिक कन्हाई आइ बाँसुरी बजाई,
धुनि सुनि कै रही न मति गति मन लुञ्ज मैं ॥
चलि न सकति बृन्दाबन की गलिन बीच,
खंजन नलिन नैनी अलिन की गुञ्ज मैं ।
देव दुरी जाय अकुलाय ससमित मुखी,
कुसमित बकुल कदम्ब कुल कुञ्ज मैं ॥१९॥

ललितहाव

कबित्त—चाँदिनी महल बैठी चाँदिनी के कौतुक कौ,
चाँदिनी सी राधे बिछी चाँदिनी बिसाल रैं ।
चन्द्र की कलासी देवतासी देवदासी संग,
फूल से दुकूल पैन्हैं फूलनि की माल रैं ॥
छूटत फुहारे वे अमल जल झलकति,
चमकैं चँदोवा मनि मानिक महाल रैं ।
बीचि जरतारनि की हीरनि के हारनि के,
जगमगी जोतिनि की मोतिन की झाल रैं ।२०।

बिहिति हाव

बिहिति (ब्याज)

सवैया—
बृषभान की जाई कन्हाई के कौतुक, आई शृङ्गार सबै सजि कैं ।
रस हास हुलास बिलासनि सों, कबिदेव जू दोऊ रहे रजि कैं ॥
हरि जू हँसि रंग में अंग छुयो, तिय संग सखीनहूँ कौ तजि कैं ।
उठि धाई भट्ट भय के मिसि भामती, भीतरे भौन गई भजि कैं ।२१

बिहिति (लाज)

सवैया—

भेंट भई हरि भावते सों इक, ऐसे में आली कह्यौ बिहँसाइ कैं ।
कीजे लला रसकेली अकेली ए, केली के भौन नवेली को पाइ कैं ॥
भौंहैं भ्रमाइ कछू इतराइ, कछूक रिसाइ कछू मुसकाइ कैं ।
खैंचि खरी दई दौरि सखी के, उरोजनि बीच सरोज फिराइ कैं ।२२

नायिका नायक वियोग—दस दशा निरूपण

दोहा—हाव भाव संजोग मैं, उपजत और अनेक ।
तिन मैं सूक्षमसार गहि, दस बिधि बरनत एक ॥२३॥
इहिं बिधि दसौं प्रकार के, हाव होत संजोग ।
अब दम्पति की दस दसा, बरनौं बिहित बियोग ॥२४॥
पिय बियोग मैं दस दसा, होइ दम्पतिहिं माहिं ।
जिनते तिनके तननि मैं, एकहुँ पल कल नाहिं ।२५।
प्रथम कह्यौ अभिलाष अरु, चिन्ता सुमिरन होइ ।
तातैं बरनौं गुनकथन, फिरि उद्वेग सुसोइ ॥२६॥
परलापऽरु उन्माद कहि, जड़ता व्याधि बखानि ।
मरन कहत दसईं दसा, कबि कोबिद जिय जानि ।२७।
इच्छा जो पिय संग की, सो अभिलाष प्रमान ।
पिय चिन्तन चिन्ता कहिय, पिय सुमिरन को ध्यान ।२८।
पिय गुनवर्णन गुनकथन, अरु पिय बिरह अनेक ।
भली बस्तु नागा लगै, सो कहिये उद्वेक ॥२९॥

बिरहिनि बैरी ह्वै बकै, सो प्रलाप पहिचानि ।
करत कहत जानैं न कछु, सो उन्माद बखानि ॥३०॥
पिय बिरहज्जुर व्याधि कहुँ, जड़ता जड़ ह्वै जाई ।
मरन मूरछा एकही, बिरह दसा दस भाइ ॥३१॥

अभिलाष (भेद)

दोहा—श्रवनोत्कण्ठा दरसन, लाज, प्रेम, करि भाष ।
होत परस्पर पाँच बिधि, दम्पति के अभिलाष ॥३२॥

श्रवणाभिलाष

सवैया—

कोऊ अचानक आनि कह्यौ, मनमोहन की बतियाँ अति मीठी ।
देव तिन्हैं सुनि सुन्दर कौ हरि, देखन कौ मनु दैन बसीठी ॥
एकहीं बार चक्यौ उचक्यौ चित, आँखिनि लागैं सखी सब सीठी ।
पूरि रहे गुन रूपहीं नैननि, काननि केलि कहानी उमीठी ।३३।

उत्कण्ठाभिलाष

सवैया—

मोहन रूप चढ़्यौ चित मैं, हित भोजन भूषन भाँति न भावति ।
देखन कौ खिन खीनहिं खीन, सखीन सौं देव न जीकी जनावति ॥
भूलि गयौ गुड़ियान कौ खेल, झरोखनि झाँकति द्यौस गँवावति ।
बाल गनै न अबार सबारक, बारहिं बार किवार लौं आवति ।३४।

दर्शनाभिलाष

सवैया—

कान्ह कढ़े वृषभान के द्वार ह्वै, खेलन खौरि पिछावर घाँकी।
भीतर भौन तैं सामुहैं लाल की, बाल बिलोकि बिलोकनि बाँकी॥
हेरी न देव सु घेरी घने दुख, चेरी कौं पूछति बात पिया की।
पौरी लौं जाइ फिरी अकुलाइ, अटा चढ़ि धाइ झरोखा ह्वै झाँकी।३५

लज्जाभिलाष

सवैया—

मूरति जो मन मोहन की, मनमोहनो के मन ह्वै थिरकी सी।
देव गुपाल की बोल सुनै, छतिया सियराति सुधा-छिरकी सी॥
नीकैं झरोखा ह्वै झाँकि सकै नहिं, नैननि लाज घटा घिरकी सी।
पूरन प्रीति हियैं हिरकी, खिरकी खिरकीनि फिरै फिरकी सी।३६।

प्रेमाभिलाष

सवैया—

बीसौ बिसे बृषभानु सुतापै, हौं जानति कान्ह जियौ कछु टौना।
काहू कह्यौ बरसानै तेरी, नँदगाँव चल्यौ अब स्याम सलौना॥
खेलति ही कि अचानक चौंकि, चितै चहुँ देव दिये दृग कौना।
सूल उठ्यौ तन रूठि गयौ मन, भूलि गयौ सब खेल खिलौना।३७।

चिन्ता (भेद)

दोहा—दम्पति के अभिलाष तैं, चिन्ता बढ़ै अपार।
गुप्त संकलप अरु कह्यौ, बिकलप चारि प्रकार॥३८॥

अभिलाष चिन्ता

सवैया—

सूधेहूँ नैन लखैं न तबै, अब पैये कहाँ जब चाहत हेरौ।
कान करैं जहिं कान सबै, बिबिकान लगै अकुलान घनेरौ॥
लाजहिं जाय मिलै उतपै, इत मोहि मिलै मगु मेटत मेरौ।
मेटौं मनोरथ हौं इनके तौ, मिटैं मन मेरे मनोरथ तेरौ॥३९॥

गुप्त चिन्ता

सवैया—

कोटि कला उलटैं पलटैं, पलही पल ज्यौं मृग बागरि के।
बहु तर्क बिलास चढ़े चित बाल, पै देव सरूप उजागरि के॥
गति बंक निसंकही नाच करैं, गुन डोरि गहे गुन आगरि के।
नव नेह लग्यौ नटनागर सौं, दोउ नैन भये नटनागरि के।४०।

संकल्प चिन्ता

सवैया—

कछु और उपाइ करै जिनि री, इतने दुख लौं सुख सौं मरिबी।
फिरि अन्तक से बिन कन्त बसन्त, सु आवत जोवतु ही जरिबी॥
बन बौरत बौरी ह्वै जाऊँगी देव, सुने धुनि कोकिल की डरिबी।
जब डोलिहैं और अबीर सु हाहा, भरी कहि बीर कहा करिबी।४१

बिकल्प चिन्ता

सवैया—

खोरि लौं खेलन आवतिए, न तौ आलिन कैं मत मैं परती क्यौं।
देव गुपालहिं देखति ये, न तौ या बिरहानल मैं बरती क्यौं॥

बापुरी मंजुल आम की बाल, सु भाल सी ह्वै उर मैं अरती क्यौं ।
कोमल बोलि कैं क्वैलिया कूरि, करेजनि की किरचैं करती क्यौं ।४२।

सुमिरन (भेद)

दोहा—स्वेद तम्भ रोमांच, सुरभंग कम्प बैबर्न ।
अश्रु प्रलय सुमिरन विषय, सात्विक आठौं बर्न ।४३।

स्वेद सुमिरन

सवैया—

ईंगुर सौं मिलि जात पसीजत, अंग सुरंगन चोलनि पै ।
कविदेव कछू मुलकैं पुलकैं, उर कै उर प्रेम कलोलनि पै ॥
हँसि बोलै न बाल बिलोकै न आलिनि, झोकैं नहीं दृग डोलनि पै ।
ललकैं अँखियाँ पलकैं न लगैं, झलकैं जल बुन्द कपोलनि पै ।४४।

स्तम्भ सुमिरन

सवैया—

अंग न डोलैं उतंग फिरैं, उरध्यान धरैं बिरहज्जुर बाँधति ।
नासिका अग्र की ओर दियैं, अधमुद्रित लोचन कोर समाधति ॥
आसन बाँधि उसास भरै अब, राधिका देव कहा अवराधति ।
भूलि गौ भोग कहैं लखि लोग, बियोग किधौं यह जोगहिं साधति ।४५

रोमांच सुमिरन

कवित्त—हरषि हरषि हिय मन्द बिहँसति तिय,
बरसि बरसि रस राचे चित चोज है ।
मुलकि मुलकि स्याम स्याम सुमिरत देव,
पुलकि पुलकि उर उठत उरोज है ॥

फरकि फरकि बाम बाहु फुरहरी लेति,
खरकि खरकि खुलै मैन सर खोज है।
छलकि छलकि छबि छलकनि पलकनि,
ललकि ललकि मूँदे लोचन सरोज है ४६॥

सुरभंग सुमिरन

कबित्त—धरि बैठी ध्यान करि बैठी मूढ़ ग्यान,
जानि जिय ज्यान मोह मो हिय मढ़त हैं।
मूँदि मूँदि लोचन चितौति नींद लोचन कै,
मोचत सकोच सोच सकल बढ़त हैं॥
भूली भूख प्यास बास हास तैं उदास देव,
देखि दासी दास आस पास तैं डरत हैं।
कौन जानैं मौन धरि को है अवराधे अब,
राधे मुख आधे आधे आखर कढ़त हैं॥४७॥

कम्प सुमिरन

कबित्त—प्रेम के प्रकास आस पास की परौसिनि यौं,
पूछि पूछि जात पछितातो सबै अलिका।
कैसी है कुँवरि कासौं कहिये कहाधौं भयौ,
काहू कछू कीनो कै कुबोल बोल्यौ बलिका॥
सोवै न त्रिजाम भरी स्याम सुमिरत कहि,
बोलति बिलोकति न पौढ़ति न पलिका।

झाँपि झाँपि खोलै झपकारे दृग भारे देव,
काँपि काँपि उठैं कुच कौंल की सी कलिका ॥४८॥

बैबर्न सुमिरन

कबित्त— मोहन की मूरति सो मोही मन मोहनी,
सु मोहि महामोह व्योह मो हिय मढ़ाइयतु ।
भौंर भौंर भीतर सरोज फरकत ऐसी,
अधखुली अँखियानि उपमा बढ़ाइयतु ॥
आलिन की आन उर आनी तन आनी आन,
करत न कानही सयानही पढ़ाइयतु ।
लोनौ मुख मण्डल पै पण्डल प्रकास देव,
जैसे चन्द मण्डल पै चन्दन चढ़ाइयतु ॥४९॥

अश्रु सुमिरन

सवैया—

आई नहीं तन मैं तरुनाई, भई नहिँ स्याम के संग सजोगिनि ।
कौनै सिखाई सखीधौं कहा, सुमिरै धरि ध्यान जनौ जुग जोगिनि ॥
आँखिनि तैं अँसुवा नहिं सूखत, एकही बार ह्वै बैठी बियोगिनि ।
× × × × × ॥५०॥

प्रलय सुमिरन

कबित्त—सूधेहू न खेल खेलि जानतिही काल्हिहूँ लौं,
काहे की सयानी बानी बोलति है तूतरी ।
आपु ही तैं आजु ही सयान सीख्यौ सीखी सखी,
सारदा कि राधा कै असीस सीस उतरी ॥

अधमुँदी अँखियानि खोलति न बोलति न,
डोलति न साँस चित चाल्यौ अदभूतरी।
कीने हरि मित्र लीने बिरह दसा चरित्र,
बैठी है बिचित्र रूप चित्र की सी पूतरी ॥५१॥

साधारण सुमिरन

कबित्त—रचित महावर सौं कंज से चरन मंजु,
गूँजरी बजनि अजौं काननि जगी रहै।
आँचर उचौहैं कुच लच लचकीली अरु,
कंचन सी देह दुति देव उमगी रहै॥
भूलति न भाँवती की भाँति रती रम्भा की सी,
सूधी सी सुधानिधि सी सौधें सौं पगी रहै।
आँखिन न देखैं तौलौं आँखिन न लागै पल,
बड़ी बड़ी आँखिनि की आँखनि लगी रहै।५२
घाघरौ घनेरौ लाँबी लटैं लंक पातरे पै,
काँकरेजी सारी खुली अधखुली टाड़ वह।
लौनी गजगौनी दिन दूनी दुति हौनी देव,
लागनि सलौनी गुरु लोगन कै लाड़ वह॥
चंचल चितौनि चुभि रही चित चोर वारी,
बेसरि औ केसरि की आड़ वह।
गोरे गोरे गोलनि की मृदु हँसि बोलनि की,
कोमल कपोलनि की जी मैं गड़ी गाड़ वह।५३

गुनकथन वर्णन

दोहा—सुमिरि परसपर दम्पती, रहति सरस रस पागि ।
बिरह कथन मन गुन कथन, बहुबरनत अनुरागि ।५४।
हरष ईर्षा होइ अरु, कहियतु चित्त बिमोह ।
अपस्मार कहि गुनकथन, चारि भाँति करि टोह ।५५।

हर्ष गुनकथन

सवैया—

देव मैं सीस बसायो सनेह कै, भालु मृगम्मद बिन्दु कै भाष्यौ ।
कंचुकी मैं चुपर्‌यो कर चोवा, लगाय लयो उर मैं अभिलाष्यौ ॥
लै मखतूल गुहे गहने रस, मूरतिवन्त सिंगार कै चाख्यौ ।
साँवरे लाल कौं साँवरौ रूप, मैं नैननि कौ कजरा करि राख्यौ ।५६

ईर्षा गुनकथन

सवैया—

कैसेहूँ कोऊ करै उपहास, हौं नीकैं ही नाचति नेह नटू हौं ।
औ गुनहाई किधौं गुन देव, करी गुन जाल लपेटि लटू हौं ॥
चातक लौं घनस्याम के रूप, अघाति नहीं दिन राति नटू हौं ।
दूसरो काज न लोक की लाज, भई बृजराज की भाट भटू हौं ।५७

बिमोह गुनकथन

सवैया—

ग्वालि गई इक झाँकि वहाँ, मग रोकी सुनौ मिस कै दधि दान कौ ।
वातैं भटू वह भेटी भुजाभरि, नातौ निकासि कछू पहिचानि कौ ॥

आई निछावरि कै मन मानिक, गोरस दै रस लै अधरानि कौ।
वाही दिना ते हिये मैं गड़ो वह, ढीठ बड़ौ री बड़ी अँखियानि कौ।५८

अपस्मार गुनकथन

कबित्त—ना खिन टरत टारे आँख न लगत पल,
आँखिन लगे री स्यामसुन्दर सलौन से।
देखि देखि गातनि अघात न अनूप रस,
भरि भरि रूप लेत लोचन अचौ से॥
एरी कहु को हौं हौं कहाँ हौं कहा करति हौं,
कैसे बन कुंज देव देखियति भौन से।
राधे हौं सदन बैठीं कहती हौं कान्ह कान्ह,
हाहा कैसे हैं कहाँ हैं को हैं कौन से॥५९॥

उद्वेग दशा वर्णन

दोहा—दम्पति करिकरि गुनकथन, भरिभरि रस आवेग।
पूरन प्रेम बियोग तैं, प्रगटै उर उद्वेग॥६०॥
भली बस्तु नागा लगै, काहूँ भाँति न ओत।
त्रै उद्वेग सुबस्तु अरु, देस काल करि होत॥६१॥

वस्तु उद्वेग

सवैया—
बेष भये बिष भावै न भूषन, भूख न भोजन कौ कछु ईछी।
मीच के साधन सौंधे की साध, न दूध सुधा दधि माखन छीछी॥

चन्दन त्यौं चितयौ नहिं जात, चुभी चित माँहि चितौनि तिरीछी।
फूल ज्यौं सूल सिला सम सेज, बिछौननि बीच बिछी मनु बीछी।६२

देश उद्वेग

सवैया—
घोर लगै घर बाहर हूँ, डरनूत पलास लगैं उजरे से।
रंगित भीतिन भीति लगै, लखि रंग मही तरु रंग ढरे से॥
धूम जटा गरु धूमन के, निकसे नव जालिनि व्याल भरे से।
ए गिरिकन्दर से मनि-मन्दिर, आजु अहो उजरे उजरे से।६३।

काल उद्वेग

कबित्त—कन्त बिनु बासर बसन्त लागे अन्तक से,
तीर ऐसे त्रिबिध समीर लागे लहकन।
सान धरे सार ऐसे चन्दन घनसार लागे,
खेद खरे लागे मृगमद लागे महकन॥
फाँसी से फुलेल लागे गाँसी से गुलाब आब,
गाज ऐसे अरगजा चोवा लागे चहकन।
अंग अंग आगि ऐसे लागे हैं केसरि नीर,
चीर लागे जरन अबीर लागे दहकन॥६४॥

प्रलाप वर्णन

दोहा—दम्पति के उद्वेग हूँ, बैठि बिरह सन्ताप।
उत्कण्ठित चित प्रेम जिय, पेख्यौ प्रगट प्रलाप॥६५॥
सात भाँति बहु बाद सौं, होत ग्यान बैराग।
उपदेस प्रेम संसय कहूँ, भ्रम निश्चय बड़ भाग॥६६॥

ज्ञान प्रलाप

कबित्त—देखे अनदेखे दुखदाई भयौ सुखदान,
सूखत न आँसू मुख सोइबौं तरैं पर्‌यौ ।
पानी पान भोजन सुजन गुरुजन भूले,
देव दुरजन लोग लरत खरैं पर्‌यौ ॥
लागे कौन पाप पल एकौ न परत कल,
दूरि गौ गहन यौं सुनेह निपरैं पर्‌यौ ।
होती जौ अजान तौ न जानती इतीक बिथा,
मेरे जिय जानि तेरो जानिबौ गरैं पर्‌यौ ।६७।

बैराग प्रलाप

कबित्त—तेरौ कह्यौ करि करि जीव रह्यौ जरि जरि,
हारी पाँइ परि परि तैं न कीनी सम्हार ।
ललन बिलोकि देव पल न लगाये तब,
यौं कल न दीनी तैं छलन उछलन हार ॥
ऐसे निरमोही सौं सनेह बाँधि हौं बधाई,
आप बिधि बूड़्‌यौ ब्याध बाँधा सिन्धु निराधार।
हे रे मन मेरे तैं घनेरे दुख दीने अब,
एकै बार लै कै तोहिं मूँदि मारौं एकबार ।६८

बोर्‌यौ बंस बिरद मैं बौरी भई बरजति,
मेरे बार बार बार बीर कोऊ पैठौ जिनि ।

तुमहौ सयानी बीर बिगरी अकेली हौं ही,
गौहन मैं छाड़ यौ मोसौं भौंहनि अमैठौ जिनि॥
कुलटा कलंकिनि हौं कायर कुमति कूर,
काहू के न काम की निकाम यौंही ऐंठौ जिनि।
देव तहाँ बैठियतु तहाँ बुधि बैठैं हौं,
ता बैठी हौं बिकल कोऊ मोहि मिलि बैठो जिनि ।६९

उपदेश प्रलाप

सवैया—

प्रेम की पीर न जानी तैं बीर, जु छैल कटाछिन सौं करि छ्वैहैं ।
देव तुम्हैं त्रसिहैं हँसिहैं, बलि बावरी ह्वै रस ही रस चैहैं ॥
आई तौ सीख सिखावन कौं, पै सखी सुनि आपनी यौ मति जैहैं ।
मोही सी मोही सी मोहीं कहै, अभै नैक मैं मोही सी मोही सी ह्वै हैं।७०

प्रेम प्रलाप

सवैया—

कान्ह भई बृषभानसुता भई, प्रीति नई उनई जिय जैसी ।
जानै को देव बिकानी सी डोलै, लगै गुरु लोगन देखि अनैसी ॥
ज्यौं ज्यौं सखी बहरावति बातनि, त्यौं त्यौं बकै वह बावरी ऐसी ।
राधिका प्यारी हमारी सौं तू कहि, काल्हि की बैन बजाई मैं कैसी७१

संशय प्रलाप

सवैया—

मोही सबै किधौं हौं उनही मैं, कि हौं अरु वे इक संग लसेई ।
बाहर भीतर ही तर ह्वै, दिहरी तर देखी सुठौर ठयेई ॥

काहे को लाज लजाइ री को अब, गोकुल गेह सनेह पगेई।
देख्यौ सुन्यौं नहिं दूसरौ देव, जिते तित जाँऊ तितै चित वेई।७२।

बिभ्रम प्रलाप

सवैया—

आज भलैं गहि पायो गुपाल, गुहौं गहि लाल तुम्हैं गुन लालहिं।
हौं नहिं देव कहूँ चलि चाल, बसे वे हिये मैं मिलाइकै मालहिं॥
बोलत काहे न बोलि रसाल है, जानति भाग भरे निज बालहिं।
सींचत नैन बिलासनि के जल, बाल सु भेंटति बाल तमालहिं।७३।

निश्चय प्रलाप

सवैया—

काहू की कोक कहाँ बलि हौं, नहिं जाति न पाँति न जातैं खिसौंगी।
मेरोई हास करौ किन लोग, हौं को कहि देव जू काहू हँसौंगी॥
गोकुलचन्द की चेरी चकोरी, हौं मन्द हँसी मृदु फन्द फँसौंगी।
मेरी न बात बकौ बलि कोऊ, मैं बौरिय ह्वै बृज बीच बसौंगी।७४।

उन्माद वर्णन

दोहा—प्रेम बिकल बकि बकि थकै, बाढ़ै बिरह बिषाद।
बिन बिचार आचार जियँ, सो प्रगटै उन्माद॥७५॥
मद बिमोह अरु बिसमरन, कहि बिच्छेप बिछोह।
पाँच भाँति उन्माद कहि, जहाँ भूरि भ्रम मोह।७६।

मदनोन्माद

कबित्त—धुनि धुनि सीस धुनि सुनि बाँसुरीकी देव,
चुनि चुनि चितज करत चित चारी सी।

टनि टनि दूने दुख सूने से सकल सुख,
लूँने बिन ज्ञान कटी मोह की कुठारी सी ॥

रची रुचि रंग सौं उघरि नची अंग अंग,
को करै सुकाज लोक लाज ही बिडारी सी ।
बावरी ह्वै बोलै न सम्हारति न बोल,
बृज बीथीनि मैं डोलै मुख खोलै मतवारी सी ।७७

मोहोन्माद

कबित्त—जब ते कुँवर कान्ह रावरी कलानिधान,
कान परी वाके कहूँ सुजस कहानी सी ।
तबहीं ते देव देखी देवता सी हँसति सी,
रीझति सी खीझति सी रुसति रिसानी सी ॥

छोही सी छली सी छीनि लीनी सी छकी सी,
छिनि जकी सी टकी सी लगी थकी थहरानी सी ।
बींधी सी बँधी सी बिष बूड़ति बिमोहति सी,
बैठी बाल बकति बिलोकति बिकानी सी ॥७८॥

बिस्मरणोन्माद

सवैया—

मोहनलाल लखे कहुँ बाल, बियोग की ज्वालनि सौं तन डाढ़ति ।
लागि गई अँखिया चित चोरन, भागि गई गुरु लोग की गाढ़ति ॥

और की और कहै सुनै देव, महा दुचिताई सखीनि कै बाढ़ति ।
नाँव लिये मुख ओर चितै रहै, सो री घरीक मैं घूँघट काढ़ति ।७९।

बिक्षेपोन्माद

कबित्त— चलि चलि मोसैं कहै चलि चलि होति कित,
बिचलि बिचलि बलि परति बिथकि थकि ।
रूसि रूसि हँसि हँसि खीजि खीजि आवैं खरी,
रीझि रीझि जाइ छोह छोहि छबि छकि छकि ॥
काहि तकि तकि चित कित कित हिय ठायौ,
देव कहै रहै कौन बिथा सौं बिथकि थकि ।
बिनहीं बिचार कै बचन बिन बूझैं बीच,
बहकि बहकि बिन काज उठै बकि बकि ।८०।

बियोगोन्माद

कबित्त— आक बाक बकति बिथामैं बूड़ि बूड़ि जात,
पीकी सुधि आयें जी की सुधि खोइ खोइ देति ।
कोह भरी कुहँकि बिमोह भरी मोहि मोहि,
छोह भरी छिति पै छली सी रोइ रोइ देति ॥
बड़ी बड़ी बार लगि बड़ी बड़ी आँखिन तें,
बड़े बड़े अँसुआ हिये में मोइ मोइ देति ।
बाल बिन बालम बिकल बैठी बार बार,
बपु मैं बिषम बिष बीज बोइ बोइ देति ॥८१॥

व्याधि वर्णन

दोहा—अति प्रलाप उन्माद तें, अन्तर उपजै आधि।
जल भोजन सुख सयन बिन, बाढ़ति बपु मैं ब्याधि।८२

तीनि भाँति की ब्याधि सौं, प्रथम होइ सन्ताप।
दूजी कहियतु ताप तें, तीजी पश्चात्ताप॥८३॥

सन्ताप ब्याधि

कबित्त—हाहा हौं करति मेरौ कह्यौ करि मेरी बीर,
पवन अवन धावैं धीर न धरत धाम।
देव घनस्याम बिन जोबन दवा सौं जरै,
ग्रीषम मही सी हौं जरीये जात आठौं जाम॥
आयौ बैरी मधु बधु कीनों कौन ब्याधनी कौं,
काल भई कोकिला छपाकरन होत छाम।
ताही कूँ कँपावन बस करे जिन बालम वे,
अरे जनि कँपावै मों करेजनि कुटिल काम।८४।

ताप ब्याधि

कबित्त—साँझ कौ सौ चन्द भोर कौसौ करि राख्यो मुख,
भोर की सी कांति साँझ की सी अब भई आनि।
साँझ भोर कौसौ नभ देखिये मलीन मन,
साँझ भोर चकवा चकोर की सी हित हानि॥

कैसैं करि कोसौं कासौं कहौं कैसी करौं देव,
कीनी रिपु कैसी केसू की सी केसु कैसी बानि।
कैसी लाज कैसो काज कैसी धौं सखी समाज,
कैसौ घरु कैसौ बरु कैसौ डरु कैसी कानि।८५

पश्चाताप व्याधि

कबित्त—सूधैही सिखाइकै सखीनि समुझाई होति,
देव स्यामसुन्दर कै सौहैं समुहाती क्यौं।
बिचर बिचरि बीचि बैरिन मुकत होते,
बिरहै की बेदना बिकल बिलखाती क्यौं॥

जगमगे जौंनि ज्वाल जारन सौं जारतीन,
जमजाई जामिनि जुगन सम जाती क्यौं।
क्वैलिहाई क्वैलिया की काल ऐसी कूकैं सुनि,
कौंल की सी कलिका कुँवरि कुम्हिलाती क्यौं।८६

जड़ता वर्णन

दोहा—व्याधि बढ़त बाढ़ै बिथा, बिन भोजन बिन नीर।
निसिदिन छिनछिन छीन ह्वै, जड़ ह्वै रहत सरीर।८७।

कबित्त—कमल सु नैन जोरे जियत सु नैन तुम,
तब तैं सुनै न स्याम सखिन के सोर ए।

लागत न जन्त्र मन्त्र तन्त्र परतन्त्र परी,
कान परे देवगन मन्त्र चित चोर ए ॥
रावरोई रूप रमि रह्यो वाके रोम रोम,
छैल छेद छाती मैं कटाछिन के छोर ए ।
लाग्योई रहति वाहि लालन तिहारो नेहु,
अद्भुत भूत जिन पाचौं भूत भोर ए ॥८८॥

मरण वर्णन

दोहा—दसईं अवस्था मूरछा, कहूँ मरन ह्वै जात ।
नीरस जानि न बरनिये, जीवन अति सरसात ॥८९॥

कबित्त—केलि के बगीचे लौं अकेली अकुलाई आई,
नागर नबेली बेली हेरत हहरि परी ।
कुञ्ज पुञ्ज तीर तहाँ गुञ्जति भँवर भीर,
सुखद समीर सीर नीर की नहरि परी ॥
देव तिहिं काल गुहि माल लाई मालिनी,
सुबाल कौं बिरह बिष ब्याल की लहरि परी ।
छाँह भरी छरी सी छबीली छिति माहिं फूल,
छरी कै छुवति फूल छरी सी छहरि परी ॥९०॥

दोहा—रसबिलास सिंगार रस, सरस अपूरब ग्रन्थ ।
कह्यौ देव कबि भेव सौं, रीति पुरातन पन्थ ॥९१॥

सवैया—

बीच मरीचनि के मृग लौं, अब धावै न रे सुनि काहू नरिन्द के ।
ओस की आस बुझै नहिं प्यास, बिसास डसै जिनि काल फनिन्द के ।
भूलै न देव निहारि असारनि, प्यास निसारत तार के बिन्द के ।
इन्दु सौं आनन तू जु चितै, अरबिन्द से पाँयन पूजि गुबिन्द के ९२

दोहा—जै जै श्री बृजकुल तिलक, बृज जीवन बृज काज ।
बृजबल्लभ बृजबल्लभी, बृजबल्लभ बृजराज ॥९३॥

रानी राधा हरि सुमिरि, बानी देव प्रकास ।
भाव सँ जोग बियोग दस, दसा सुसप्त बिलास ॥९४॥

इतिश्री कविदेवकृते संयोग वियोग दशा वर्णनम् नाम
सप्तमो बिलास सम्पूर्णः ॥ ७ ॥

प्रमुख वितरक

बनारस मर्केन्टाइल कं०

पोस्ट बॉक्स ९२८ कलकत्ता-१